

५५.६

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुनाथपरब्रह्मणे नमः ॥ वरदराजः ॥ वरानुप्रयच्छंति ते वरदाः वरदानां
राजा वरदराजः स्वराजः वरजः तेषां ते प्रयच्छंति स्म ॥ देतुं जेतुं वरदस्तु ॥ वरदजः तेषां चाजो राजा तो व
रदराजस्तु ॥ वरदराजो जो ~~कोही~~ ~~पण~~ ~~जो~~ ~~तो~~ ॥ पाणिनीयानां ॥ पणनं पणः ॥ पणो स्यात्सीति
पणी पणिनः ॥ गोत्रापत्यं पुमान् पाणिनः ॥ पाणिनस्य अपत्यं पुमान् पाणिनिः ॥ पाणिनिना प्रोक्ता
निपाणिनीयानि ते वा पाणिनीयानां ॥ पणनं जे स्तुति जीतो च पणस्तु ॥ पणजो तो आहे त्यास तो
पणीस्तु ॥ पणी जो त्याचा गोत्रापत्य पुमान् तो पाणिनस्तु ॥ पाणिन जो त्याचा अपत्य पुमान्
तो पाणिनिस्तु ॥ पाणिनी जो ते गोत्रोक्ता निस्तु ॥ बोलिजे लीं तीं पाणिनीयेंस्तु ॥ पाणिनीयें जीं सों
जी मध्यसिद्धांत को मुदी ॥ मध्याश्रिते सिद्धांताश्च मध्यसिद्धांताः ॥ मध्यसिद्धांतानां को मुदी
व को मुदी तों मध्यसिद्धांत को मुदी ॥ मध्यस्तु ॥ नातिरुख नाति दीर्घ असजे सिद्धांतें ते मध्यसि
द्धांतस्तु ॥ मध्यसिद्धांत जे त्यांचा को मुदी च परी जी को मुदीस्तु ॥ प्रकाशिका ती मध्यसिद्धांत को मु
दीस्तु ॥ मध्यसिद्धांत को मुदी जी ती ते करोति करतो ॥ किं कृत्या काय करुन ॥ श्रीगुरुनृश्रियायु
क्ताः गुरवः श्रीगुरवः तान् श्रीगुरुनृश्रीजीविद्यालक्ष्मीजीतीशरीयुक्तस्तु ॥ सहिते ते श्रीगुरु

मुनि
जिंताथ

२. को.

हिउरुसूत्रे जीती अणादिसंज्ञार्थजाणावी

स. श्रीगुरु ऐसे भट्टोजी दीक्षितान् भट्टोजी दीक्षित जे त्यां प्रति न त्वानमस्कारकरुन् ॥१॥ अउउण।०
हल्ल ॥१॥ इति चतुर्दशसूत्राणि अणादिसंज्ञार्थानि। अण आदि र्था संज्ञाः अणादयः अणादयश्च
ताः संज्ञाश्च अणादिसंज्ञाः अणादिसंज्ञाः अर्थो येषां तां नि अणादिसंज्ञार्थानि। अण आह आदि
ज्योस त्या अणादिस. अणादि अस्या ज्यो संज्ञा त्या अणादिसंज्ञास. अणादिसंज्ञा आह ते अर्थ
जो प्रयो जन जे ते जे ज्यो चे ती अणादिसंज्ञार्थसि. अणादिसंज्ञार्थे ऐसे प्र. हकारादिषु अका
रउच्चारणार्थः। हकारः आदिर्येषु ते हकारादयः तेषु हकारादिषु हकारादिकु जे त्यां चे ठाई जो अ
कार तो उच्चारणार्थ जाणावा। लण मध्ये विसंज्ञकः। लणः मध्यः लण मध्यः तस्मिन् लणम
ध्ये लण या मध्ये जो अकार ते उल्लंघन जाणावा। अर्हण अधुक्षत ही उदाहरणे जी उल्लंघन या उ
दाहरणाचे ठाई हय कार्य हय जे ते सिद्ध सिद्ध ऐसे भविष्यति हो उल्लंघन इति वांछता मुनिना असे
उल्लंघन करणा रमु निजें तो जो अटि शल्यपि अट्ट प्रत्या हा चे ठाई शल्य प्र. ई ही अयं हा हकार हकारः
जो तो हिरुपातः दोन वेळ बोलि जे ला ॥ हल्ले ॥ उपदेशाचे ठाई अं ये जे हल्ले ते हल्ले
हो क होय। आ धा नो उच्चारण आ धो उच्चारण आ धो जे पाणि नीय का लो य न पतें ज
रा

मध्य. की

सभागस्थाने लोचो उर्ध्वभागी उपन्नशाला जो अचूतो उदात्त समजावा। ताल्वादि कुं
लोचो अधोभागी उपन्नशाला जो अचूतो अनुदात्त जाणावा। उदात्तानुदात्त धर्मे क
रून जो शाला जो अचूतो स्वरित जाणावा। सः अचूतो अचूनवा प्रकारचा होला ता
ही प्रत्येक स्त-एथ कु एथ कु अनुनासिक अणरवी अननुनासिक यां ही करून दिधा
दो हो प्रकारचा जाणावा। मुखनासिका वचनः अनुनासिकः। मुख सहित जीनासि
का तेणे करून उच्चारिजे तो जो वर्ण तो अनुनासिक जाणावा। तदिथो ते असे। अ
नुनासिक वर्णांचे एथ कु एथ कु अठरा भेद। लृवर्णांचे बाराच भेद। त्या सदीर्घ वना
ही लृणून्। एचू जे लोचो ही बाराच भेद। त्या सदीर्घ वना ही लृणून्। तु त्या सप्र
यत्नं सर्वर्ण। ताल्वादि क सुन। अ न वि आभ्यंतर प्रयत्न दे द्य जें तें जा वर्णांचो जा वर्णां शि
तुल्यते वंद्य परस्पर सर्वण होय। कृ लृ वर्णयोः मिथः सावर्ण्यं वाच्यं। अ न वि लृ या
वर्णांचे परस्पर सावर्ण्य बोलावे। अल-अकार कुल-क वर्ग हल-हकार विसर्जनीय ल-
विसर्ग योचे कं ठ स्थान जाणावा। इल-इकार चुल-च वर्ग यल-यकार अणरवी

शकार योचे तालुस्थान जाणावे। ऋस्। ऋकार दुस्। टवर्ग रस्। रेफार अणरवीष
 कार योचे मूढीस्थान जाणावे। लस्। लृकार तुस्। तवर्ग कस्। लृकार अणरवीस
 कार योचे दंतस्थान जाणावे। उस्। उकार पुस्। पवर्ग अणरवी उपध्मानीय योचे ओ
 षस्थान जाणावे। अमउ. णनहेवर्गीचे पंचमवर्ण योचे नासिकास्थान अणरवी
 चकारेंकरून पूर्वोक्त स्थाने कंठादि जीतीही ऐंशी दोही जाणावी। एतस्। एकार
 ऐस्। ऐकार योचे कंठ तालुही दोही स्थाने जाणावी। ओतस्। ओकार ओ
 स्। ओकार योचे कंठ अणरवी ओषही दोही स्थाने जाणावी। वस्। वकार
 याचे दंत अणरवी ओषही दोही स्थाने जाणावी। जिह्वा मूलीय योचे जिह्वा
 मूळ स्थान जाणावे। अनुस्वार जो याचे नासिका स्थान जाणावे। यत्न जो
 तो दोहो प्रकारचा। एक आभ्यंतर। अनखिंबाह्य। त्यामध्ये आभ्यंतर जो तो पांचा प्रकारचा। ते प्रकार

मध्यमो.

हे स्पृष्ट। ईषस्पृष्ट। ईषद्विदुत। विदुत। संवृत। यामध्येस्पृष्टप्रयत्नजेतेस्पर्शसंतकवर्णाचे। ईषस्पृष्टं
तस्याचे। ईषद्विदुतउपसंतकांचे। विदुतस्वरांचे। द्रुत्वजोअवर्णत्याचाउच्चारणकाकिसद्वत। अनसि
साधनीकदशेचेठारितरविदुतच। अनसिवाह्यजोतोअक्राप्रकारचा। तेषकार। विवारासंवारा। श्वा
स। नाद। घोष। अघोष। अल्पप्राण। महाप्राण। उदात्त। अनुदात्त। स्वरित। इति एकाद
२ अ। विवारश्वासैघोषहेतीनप्रयत्नजेतेस्वरप्रत्याहारचेजाणावे। संवारनादघो
षहेतीनप्रयत्नजेतेहरीप्रत्याहारचेजाणावे। वर्गचेप्रथमसु। कचटतपअणरवीत्
तीयसु। जबगउदअणरवीपंचमसु। अमउ। णनअणरवीयणेहेजेतेअल्पप्राणप्रय प्रत्याहार
लवेंतेजाणावे। वर्गचेद्वितीयसु। स्वफळुठथअणरवीचतुर्थसु। शमघटधअणरवी
शल्लसु। प्रत्याहारहेजेतेमहाप्राणप्रयत्नवंतजाणावे। रुदयः कआहेआदिज्यांस सुप्रथम
मावसानाः मआहेअवसानीसु। अंतीज्यांचेहेवर्णजेतेस्पर्शप्रयत्नवंतजाणावे।
यणहेजेतेअंतस्थप्रयत्नवंतजाणावे। शल्लहेजेतेउष्मप्रयत्नवंतजाणावे। अचूहे ३

जे ते स्वर ~~का~~ जाणावे। कल. ककार खल. खकार यांचे प्राकूल. पूर्वी अ
 सदृश ई विसर्ग जो तो जिह्वा मूलीय जाणावा। पल. पकार फल. फकार यांचे प्राकूल.
 पूर्वी जो अ ई विसर्ग सदृश तो उपध्मानीय जाणावा। अं या चा असा वयव जे
 व्यंजन तो अनुस्वार जाणावा। अः या चा असा वयव जे व्यंजन तो विसर्ग जाणा
 वा। अणु उदित सवर्ण स्य च अपत्ययः। अविधीयमान जो अणु तो अण रवी उदित
 जो तो ही सवर्ण जो त्याचा संज्ञक होय। अत्रैव ल. एथे च अणु जो तो परणकारयु
 क्त जाणावा। कु. चु. तु. पु. रु उदित जाणावे। तत्तल. अणु उदित. प्रत्ययः यासू
 त्रे करुन जे सा गीतले ते असे अकार जो तो अष्टादश भेदांचा संज्ञक होय।
 तथा ल. त्या प्रकारे करुन चै इकार अण रवी उकार हे जे ते अष्टादश भेदांचे
 संज्ञक होत। रुकार जो तो त्रिंशत्तल. तीस भेदांचा संज्ञक होय। एवं ल.
 या प्रकारे करुन च लृकार जो तो ही तीस भेदांचा संज्ञक होय। ए च

मध्य को.

अविलंबेकरून जे उचारण त्याचे नाम संहिता

४ जे ते द्वादश ल. वारा वाराचे संश्लोक होत ॥ अनुनासिक अण रवी अनुनासिक अण
भेद करून येव ल जे ते द्विधा ल. दोहो प्रकारचे ॥ ते न द्विधा हे तु ना ते दोहो प्रकारचे ल.
अनुनासिक जे ते दोघा दोघाची संज्ञा ॥ परः ॥ संनि कर्षः ॥ संहिता ॥ वर्णानां वर्ण जे
त्यां अतिशयित ल. अतिशये करून जो संनिधी तो संहिता संश्लोक होय ॥ हलः ॥
अनंतराः ॥ संयोगः ॥ अजिभः ल. अच जे तीं ही करून अव्यवहित जे हल ते संयो अचरदि
ग संश्लोक होत ॥ सुप् तिउं. तं. पदं. सुबंत अण रवी ति गंत हे जे ते पद संश्लोक ते जे हल
होत ॥ इति संज्ञा प्रकरणं समाप्तं ॥

४

निर्देशसु-उच्चारण

श्री. इ. कः। यण। अचि। इकाचेठाईयणहोय अचिअचूपुटे अस्तासंहिताकर्तव्य अ विधीयमान
 स्था। तस्मिन्। इति। निर्दिष्टे। पूर्वस्य। समम्यं तपदासं निर्देशो करुन् विधीयमा लु. क्रियमाण
 नजे कार्यते निमित्तभूतं यणाच्या अव्यवहितजो पूर्वस्यासच होय। स्थाने। पूर्वकोण
 अंतरतमः। प्रसंगे सति शास अस्ता अत्यंत सदृशः सदृशतमः अत्यंत जो सदृश स्थानी
 स. तुल्य स्थान प्रयत्न करुन जो सदृश तो असं सदृश स. सदृश जो तो आ तम
 देश होय। अनचि। च। अचाहन् पर जो पर त्यासद्वित होय विकल्पे करु
 न अचूपुटे न स्ता। सलंनरी सशि। सलां सजरी होय सरूपुटे अस्ता।
 संयोगां तस्य लोपः। संयोगां तेने पद त्याचा सर्वाचो लोप होय। अलः अं
 त्यास्य। षष्ठी निर्दिष्ट जो स्थानी त्याचा जो अंत्य त्यास्य आदेश होय। ऐ
 संप्राप्त अस्ता। यणः प्रतिषेधः। वाच्यः। यणाचा प्रतिषेध चोली वा।
 अचूहीन जो वर्ण तो परवर्णीरी जो डावा। एचः। अमवायावः। एचजे

मध्य. को.

एकारास

हर ए
विष्णो ए
न अर्कः
को अर्कः

५

त्यां सक्तमेकरुनै अय होय ओकारास अव. ऐकारास आय. औकारास आव होय।
एते स्युः हे होत उचि अच पुटे अस्तां। यथा संस्थं। अनु देशः। समानां। सम
संबंधी जो विधि तो यथा संस्थ होय। वां तः। यि। प्रत्यय। यादिक प्रत्यय पु
टे अस्तां ओकार ओकार यां स वां ता देश होत। व अग हे अंती जाचे तो वां त।
गोः। यतौ। छंदसि। उप संख्या नं। अध्व परिमाण। च। अध्व परिमाण गम्य मा
न स. वाच्य अस्ता ओदंत जो गो शब्द त्यास यूति शब्द पुटे अस्तां उप संख्या
न स. अ वा देश कराना। गो यूतिः। धातोः। तं निमित्तस्य। एव। यादिक
प्रत्यय पुटे अस्तां धातूचा जो एच त्यास वां ता देश होय पूर्व सूत्रे करुन
तर्हि स. तर तन्निमित्तस्यैव यादिक प्रत्यय निमित्तक जो धातूचा एच
त्यास ब्रह्म होय नान्यस्य अन्यास न होय। लो। यं। अवश्य लो। यं। तं निमित्त
स. यादिक प्रत्यय निमित्त अर्से कां लि इले स। ओय तो ओ। य त। अत्र मा भूतः
या उदाहरणी वां ता देश न होत

गो यं
नो यं

५

क्षम्यजये। शक्यार्थे। हे सूत्र जें तें यां तादेश निपात नार्थ जाणावें। शक्यार्थ कोल-
 २८६ स। योग्यार्थी न हो कुत्रोक्षे तुं योग्ये जेयें। क्रम्यः। तदर्थे। त्रे-
 तोरल। घेणार कीणी मुःल। घे कुत्र इति बुध्याया बुद्धीने करुन आपणे हरे वाजा रुस्व
 राचे ठाई प्रसारित ल। ठे वले तें क्रम्यल। अन्य तुल। त्याहून वेगळें तें क्रम्य। घटनेदु-
 क्रमणा हल। विकारो कारणी योग्य। अत्र। एउ। गुणः। अत्रल। अकार एउ। ल। ते अक्षु-
 एओ हे जे ते गुण संज्ञक होत। तपरः। तत्कालस्थो तः परायस्मात् तसः तपरः। तका दीर्घमेद-
 रस्य हे पुढे यास तो तपरल। तो तपरस्तपरः तका राहून पुढिल चो जो तो हीतप त एओ व-
 रा। तपर उच्चारण समान कालिक जो त्यासच तपरल। पूर्व पराचे ठाई ल। पू द्भेद न पर-
 व परास मोडून एक होय हे अधिकार सूत्र जाणावें। आत। गुणः। अवर्णा ह करणास्त-
 नू अचू पुढे ओस्ता पूर्व परस्थानी एक गुणा देश होय। उप ईदुः। रमा ईशने

मध्य-को.

गंगा उदकं उपदेशो अच अनुनासिकः इत् उपदेशाचे ठाई अनुनासिक जो
अच तो इल्लं शक होय। पाणि नीय वर्ण जे ते प्रतिज्ञातं अनुनासिक्यं सेवाते प्रतिज्ञा
नुनासिक्याः। लण सूत्र स्थ जो उर वर्ण ते जोरी सहो आर्य माण जो रेफ तोर
कार अण खील कार याची संज्ञा जाणावी। ~~इत्~~ इत् सहो आर्य माण जो रेफ त्या
चे स्व रूपर असें तें र लयोः संज्ञा। ३ः १ अण्। २ परः। ३ः नाम्ना स्थाने
जो अण् सः तो सं पर हो त्या ता प्र वर्ततो। रुद्यं रुद्धिः। त व लू कोरः। लो
पः। शाकल्यस्य। अवर्ण पूर्वक पदांती विद्यमान जे य कार व कार यांचा विक
ल्पे करून लोप होय अश पुढे अस्ता। पूर्वत्र। असिद्धं। स पाद स साध्या
यी प्रति त्रिपादी असिद्धा त्रिपादी च। ठाई ही पूर्व प्रति परं शास्त्रं असिद्धं।
हर इह। विष्टो इह। रुद्धिः। आत्। ऐव। आत् ल. आकार ऐव ल. ऐ ओ हे
जे ते रुद्धि संशक होत। रुद्धिः। ए वि। आत् अवर्ण हन ऐव पुढे अस्ता पूर्व

परस्थानी वृद्धि होय। गुणाचा अपवाद। कृष्ण एक त्वांगे गाओ पः। देव ऐश्व
 श्री कृष्ण ओ कंठ्यं। एष धत्तु सु। अवर्ण हनू एति नाम एजादिकु इणु धात्रे
 एधति नाम एजादिकु एध धात्रे कुठि च परे कुठ पुठे अस्ता पूर्व परस्थानी वृ ही
 द्वि होय। उप एति। उप एधते। एष कुहः। एजादिकु असे संज्ञात्वा सद्गते
 नो उप इतः। सा भवान् प्र इदि धत्तु अश्नात्। कुहिन्यो। उप संख्या नो। वाति
 का। अक्षरा व्यास कुहिनी रा व्य पुठे अस्ता पूर्व परस्थानी वृद्धि बोलावी।
 अक्ष कुहिनी। स्वात्। ईर रिणोः। स्वात् नाम स्वरा व्या हनू ईर अण रवी
 ईरि नृ हे पुठे अस्ता पूर्व परस्थानी वृद्धि होय। स्व ईरं। स्व ईरी। स्व ईरिणी।
 प्रात्। कुह कुठ उठि। एष। एष्य। प्रात् नाम प्ररा व्या हनू कुहादिकु पुठे
 अस्ता पूर्व परस्थानी वृद्धि होय। प्र कुहः। प्र कुठः। प्र कुठिः। प्र एषः। प्र ए
 ष्यः। कृत्वा। वृत्ती या समासे। अवर्ण हनू नृ रा व्य पुठे अस्ता ही

मध्य-को.

७
तृतीयासमासवाच्यअस्तापूर्वपरस्थानीवृद्धिहोय। सुखऋतः। प्र। व। स। न। रा।
कं वल। वसना। ऋण। दृश। एषां ऋण। स। ऋण। रावृपुटे अस्तापूर्वप
रस्थानीवृद्धिहोय। उपसर्गः। क्रियायोगे। प्रादिकजेते क्रिये शी योग
अस्ताउपसर्गसंस्कृते। गतिः। च। प्रादिकजेते क्रिये शी गतिसं
स्कृते। भूवादयः। धातवः। क्रियावाचिअसेजे भ्वादि कृते धातुसं
स्कृते। उपसर्गः। ऋति। धातौ। अवर्णितजो उपसर्ग त्याहने ऋ
कारादिक धातु पुटे अस्ता वृद्धिहोय। प्र। ऋ धति। वा। सुपि। आ
पिशलेः। आतृ नाम अवर्णितजो उपसर्ग त्याहने ऋकारादिक सु
पुधातु पुटे अस्ता विकल्पे कर्तृवृद्धिहोय। अचोरहाभ्यां। ह। अ
चोहने परजेरे भ हकार त्याहने पुठिल चाजो परत्यासद्वित्त विक

ल्पे करुन होय। हे प्रा स अस्ता। शरः। अचि। अच पुटे अस्ता शर स
 दित्तन होय। प्ररूप भीयति। एडि। पररूप। अता त न म अ व र्ण त जो उ
 पसर्ग साहन एजा दि कुधा तु पुटे अस्ता पूर्व परस्थानी पररूप ए का दे
 श होय। प्र ए ज ते। उ प ओ ष ति। अचः। अं सा दि। टि। अचामध्ये अं स
 जो अच तो आह आदि ज्या स असा जो समुदाय तो दिसं सक होय। वर
 श कं ध्या दि धु। पररूप। वा च्य। श कं ध्या दि कु जे ला चै ठा ई पररूप गण
 बोलावे। तच टेः। तच पररूप ते पररूप पजे ते टेः दिस मुदा यो स
 दे उ न। श क अं धुः। कर्क अं धुः। कुल अटा। सीम अंतः अरी
 स्थिति अस्ता के श वे श अर्थ गम्य मान अस्ता पररूप मनस ईषा।
 हल ईषा। लंगल ईषा। पतत्र अं जलिः। सार अंग अं री स्थित अस्ता
 के श वे श ल वा य का ने वेणी चा भाग

वर
 गण

मध्य. को.

२ अवर्णहृनरवराब्दपुटे अस्ता अनियोगवाच्य अस्ता।

स्थूल आलो
कर्म अय

विंशत्य
ओष्ठः

पञ्चपक्षिवाच्य अस्ता। पञ्चपक्षतिरिक्त अर्थी सारांगः। आकृतिगणहो
यं। महात्मा. मोठा। एवम्। अनियोगो क एव अस्ती स्थिति. अनिश्रयवा
च्य अस्ता। अनियोगस. अनिश्रय। अनियोग अर्थ असे कां सट् ले स।
तव एव। तवैवा ओष्ठो योः। समासे। वा। अवर्णहृन ओष्ठो राब्द
पुटे अस्ता ओष्ठो राब्द पुटे अस्ता पररूप विकल्पे करे न होय समासा
रुठाई। स्थूल ओष्ठः। नीतिर वृद्धि सली। पुर्व ओष्ठ। समासका सट्.
तव ओष्ठः। वृद्धिः। ओमाउः। अव। अवर्णहृन ओष्ठो राब्द अणरवी आ
पु. राब्द पुटे अस्ता पररूप एकादेश होय। शिवो य ओं नमः। शिव एहि।
अर्कः। सर्वर्ण। दीर्घः। अर्कहृन सर्वर्ण अच पुटे अस्ता पूर्वपरस्थानी
दीर्घ एकादेश होय। दस्य अरिः। श्री ईराः। विष्णु उदयः। होत नृकारः।
३ शिव आ इहि अस्ती स्थितिया सगुण सत्ता

स. आ. उ. संज्ञा एहि होत।

पदांतीविद्य
मान ४

एउः। पदांतात् अति। पदांतीविद्यमानजोएउः। याहूनअतपुटेअस्तापूर्वप
रस्थानीपूर्वरूपएकादेशहोय। हरेअवा। विस्कोअन। सर्वत्राविभाषागोः।
लोकेवेदेचेलोकावेठाईवेदावेठाईहीएउः। आहैअंतीज्याचेतोएउं। तअ
साजोगोशब्दसासअतस्मिन् हस्वअकारपुटेअस्ताविकल्पेकरुनप्रक
तिभावहोयपदांतअस्ता। प्रकृतिभावसंघिनहोय। गोअग्रे। प्रकृतिभाव
गोग्राहेपूर्वरूपसालं। सूत्रामध्येएउं। तग्रहणकिमर्थ। चित्रगुअग्रे। अग्नी
स्थितअस्ताप्रकृतिभावहोइलसं। एउंतग्रहणकेले। पदांतकासदलेस। गो
अस। अग्नीस्थि। प्रकृतिभाव। तोनंसांलापाहिजे। उ। सिउ। सोमचे। एउं। उ।
सिउ। सोरतिपूर्वरूपमेकादेशस्यात्। एउं। हूनड। सिउ। सुसंबंधीअतस्मिन्
हस्वअकारपुटेअस्तापूर्वरस्थानीपूर्वरूपएकादेशहोय। एणेकरुन
गोः हेरूपसालं। अनेकाल्। शिर्। सर्वस्य। अनेकालजोआदेशअण

मा.प.को

स्तीरित जो आदेश तो सर्वस्य सर्वा सहो या असे पावलें अस्ता। डि. ता. च।
अने काल ऐसा ही जो डि. त तो अंत्या सच हो या अवड। स्फोट म न स्या। प स्फोट
दांती विद्यमान जो एडं. त गो शब्द स्या स अवड. असे आदेश होय विक यन स्फुटि
ल्ये करुन होय अच पुढे अस्ता। गो अग्र। ओशि स्थित. गवाग्रा। गो ग्रा
पदांत ग्रहणं कि मर्थ। गो। इ अशी स्थित. गवि। इंद्र। च। गो शब्दा स अ
वड. आदेश होय। इंद्र शब्द पुढे अस्ता ही। गो इंद्रः। अशी स्थित. व्यं
स्थित विभाषा श्रयणात्। गवाक्षः। दूरात्। हते। च। दूरत्। जे सं बो
धनीय जे वाक्य स्या ची जी टी ती स पुत होय। पुत प्रगृह्याः अवि।
नित्यं। एते नाम पुत प्रगृह्याः पुत प्रगृह्य जे ते आचि अच पुढे अस्ता
नित्य प्रकृति भावा पं न होत। आगच्छ कच्छ अत्र गो श्रवति। रुस्व।

स्फोट
यन स्फुटि
चैमते

९

लघु। संयोगे। गुरु। संयोग पुढे अस्ता ह स्व जो वर्ण तो गुरु संशक होय। दी
र्घ। दीर्घ जो तो गुरु संशक होय। गुरोः। अन्तः। अने लस्य अचि। ए
कैकस्य। प्राचा। दूरी ह न संबोधनीय जे वाक्य त्या वाक्या चा न दिन स-रुका
अने लस्य अंती चो न हे अपि राब्दे करुन अंती चा ही असा हो गुरु त्या राहने
सविकल्पे करुन पुत होय। एकैकस्य नाम पर्याये करुन। देवदत्ता। रुठ। मिन्न
एकैकस्य चो गार्इ जे जे कृत्या स्युग पत्र स। एक दाच न होत। इदं दिवच
ना। प्रगल्भ। इकारांत इकारांत एकारांत जे दिवच न ते प्रगल्भ संशक हो
य। हरी एतो विष्णु इमो। गंगे अमू। मणी व असा पद छेद करा वा मणी
द्वय असा पद छेद करु न ये। अदसः। मात्र। अदः। राब्द संबंधी जो म
कोर त्या ह न पुठिल चे जे इकार उकार ते प्रगल्भ संशक होत। अमी ई
राः। रामे के छा व मू आसाते। मात्र इहण कि मर्थ के ले। अमुके त्रा अस

मिमांसा हणे मां हण जर न से लुतर एकाराची ही अनुवृत्त्य होईल। चादयः।
 असत्त्वा अद्रव्यार्थ जे चादि कु ते निपात संज्ञक होत। लिंगसू. स्त्रिपुंनपू
 सकृ ही लिंगे एक लोदि परार्थ पर्यंताः एकापासून परार्थ पावे तो लिंग अण
 रवी सैख्या याची अन्वय जेथे हो तो त्याचे नाम द्रव्ये। प्रादयः। प्रादि कु जे उप
 सर्ग ते ही निपात संज्ञक होत। निपातः। एकाच। अनाडुं। एक अचोत्सक
 आडुं वर्ज निपात संज्ञक असो जो वर्ण तो प्रगल्भ संज्ञक होय। इडुं इः। उ
 उमे शः। वाक्य स्मरण योर डि. त्र। आ एवं नु मन्य से। ल. ओता मान तो स
 की। वाक्यार्थ स बोध क क्षाला ल. अ डि. त्र शाणा वा। आ एवं किल। असे
 स्मर तो स की। स्मरण रूप अर्थ। ओ उ छं। अ रू स्थित। ओ छं। ओत्त। ओ
 दंत जो निपात तो प्रगल्भ संज्ञक होय। अ हो ईराः। संबु इ। रा क ल्ये

स्यात्तौ। अनार्षे। संबुद्धिनिमित्तकजो ओकारतो विकल्पे कुरु प्रग
 यसंज्ञकहोय। अवैदिक इति शब्द पुढे अस्ता। विच्छेद इति। वि
 छेद इति। मयः। उग्रः। वः। वा। मया हन पुढिल चाजो उ अ ल्या से व अ सा
 आदेश होय विकल्पे कुरु। अचू पुढे अस्ता। किं उ उक्तं। अरी स्थितं
 किं मुक्तं। किं मुक्तं। इकः। असवर्णं। शा कल्प स्या। ह्रस्वः। च। पदां
 विद्यमान तीजे इकते ह्रस्व वं भूयु विकल्पे कुरु न असवर्ण अचू पुढे अस्ता।
 पावेता ह्रस्व विधिसामर्थ्या स्तवस्वरसंधिन होय। च की अत्र। अरी स्थि
 तं। च कि अत्र। च रूपत्र। पदांताः किं। गौरी ओ। गौरी। न। समासे।
 समासा चे ठाई ह्रस्व न होय। वापी अश्वः। अरी स्थितं। वाप्या अश्वः
 वाप्यश्वः। समास आह ह्रस्वता न स्यात्। वाप्यश्वः। र्त्ति। अर्कः।

मध्य-को-

कारजोतो

२९

पदांतीविद्यमानजो अकृते ~~स~~ स्वस्वमयुविकल्पेकसुत्रं। स्वरशब्द
पुटुअस्ता। अस्तास्त्रिः। अशीस्थितं। अत्रिः। अत्रिः। पदांताः
किं। अर्धेत्। अशीस्थितं। अर्धेत्। पदांतीनो ही। अर्धेत्। एवैते पदभाहे।
॥ इति स्वरसंधिः ॥ ॥ स्तोः। स्तुना। श्रुः। सकारतवर्गजेयांसराको
रुचवर्गशीयोगअस्ताशकारचवर्गहोत्। हरिसुरोते। रामसुचि
नोति। सत्रचित्। शार्तिः। नृजया। शार्तिः। शकाराहूनपुटिलचो
तवर्गल्यासश्रुत्वनहोय। विश्रुः। प्रश्रुः। एना। एः। स्तोनामसका
रुतवर्गयोः सकारतवर्गजेयांसषकारटवर्गशीयोगअस्ताषका
रुटवर्गहोत्। रामसुषष्ठः। रामसुटीकते। पेसुटा। तत्रटीका। चक्रि
नूटो कस। ने। पदांतोत्। टोः। अना। पदांतीविद्यमानजो टवर्गल्या
हूनपुटिलचो जे सकारतवर्गल्यासुष्टुत्वनहोय। षट्संतः। षटूते।
नामसंबंधीनरुतअसेजे।

११

पदांतीविद्यमानअसेकाह- ईदृते। अशीस्थित- ईदृ एवटे पदनहे ईदृ एवटे
 पदआहे एथे निषेधनपावला। एथे छंदसाले। दोः किंअसेकोस- सर्पि
 धृतमं। एथे पदांती २ वर्गनाहील- छंदसाले। अनाम्रवतीनगरीणां।
 इति। राच्यं। वार्तिक्या। नामनेवर्तित्वाणखीनगरीएतत्संबधीनसेल
 असेजेसकारतवर्गयासछंदनिषेधबोलावा। षट्नां। षट्नु
 वति। षट्नुनगर्यः। तोः। षोः। तोः। नामतवर्गजोल्यासेषकारपुढे
 अस्ताछंदनहोया। सनूषः। इत्तां। जशः। अंते। पदांतीविद्य
 मानजेसल्ल्यासजकरहोत्र। वाकुईशः। चित्तरूपः। यरः। अनु
 नासिके। अनुनासिकः। वा। पदांतीविद्यमानजोयरल्यासअनु
 नासिकपुढे अस्ताअनुनासिकविकल्पेकरुनहोया। एतत्सुस
 रिः। प्रत्येवं। भाषाया। नित्ये। पदांतीविद्यमानजोयरल्यासप्रत्येय

मध्य-कौ.

अनुनासिक

१२
धातु

संबंधी अनुनासिक पुटे अस्ता नित्य होय भाषायां भाषेचा ठाई। छंदसिना
तत्समात्रं। चित्तमये। तोः। लि। तोः। नाम तवर्गस्य तवर्गजो त्यास लिना मेलका
रपुटे अस्ता परसवर्ण होय। तत्तल्लयः। विद्वान् लिखति। नस्य नाम नका
रस्य नकारजो त्यास अनुनासिक लकार होय। उदः। स्थास्तंभोः। पूर्वस्य।
उध्वा हनू पुटिल चेजे स्था अण रवी स्तंभु त्यांस पूर्वसवर्ण होय। त
स्मात्। इति। उत्तरस्य। पंचमी निर्देश करून विधीयमान जें कार्य ते
विहिते भूतवर्ण हनू अव्यवहित जो परत्यास होय। आदेः। परस्य।
परजो त्यास विहित जें कार्य ते ज्यास साधित ले आह त्याचे आदिस
होय। अत्र्या उदाहरणाचे ठाई अघोष प्रयत्न वंत अण रवी महा प्राण
प्र-असा जो सकार त्यास तसा जो थकार तो होय। सरः। सरि। स

स्तंभ
धातु

१२

वर्णे। हलाह नूपुटिल चा जो सर त्या चालो पविकल्पे करून होय। सब
 र्ण सरपुटे अस्ता। खरि। च। खरपुटे अस्ता सलां सच रहोत। शति।
 या प्रकार करून उदरी व्याचा जो दकार त्या सतकार होय। उद स्थाने।
 उदु स्तभने। सयः। हः। अन्यतरस्यां। सयाह नूपुटिल जो हका
 र त्या सविकल्पे करून पूर्वसवर्ण होय। संवोर नोद घोष महा प्रा
 ण प्रयत्न वंत असा जो हकार त्या सतसा तादृश वर्ग चतुर्थ होय।
 वाकृ हरिः। वागृ हरिः। शः। छः। अटि। पदांती विद्यमान जो सय
 त्याह नूपुटिल जो शकार त्या सघकार होय विकल्पे करून अट
 पुटे अस्ता। तत् शिवः। तचू शिवः। पदांती का स। विरधू रं एवढे
 पद आहे। अमृ पुटे अस्ता छल जो लावे। तत् श्लो के ना ही स्थिति।

मध्य-को.

१३

मः॥ अनुस्वारः॥ मां तजें पद त्यास अनुस्वार होय हल पुढे अस्ता॥
हरि मूवें दे॥ नः॥ च॥ अपदांत स्या॥ झलि॥ अपदांती विद्यमान जे नका
र मकार त्यांस सल पुढे अस्ता अनुस्वार होय॥ यशान् स्या॥ आक्रमस्य
ते॥ अनुस्वार स्या॥ याया॥ परसवर्णः॥ अनुस्वार जो त्या समय पुढे अस्ता
परसवर्ण होय॥ शांतः॥ वा॥ पदांत स्या॥ पदांती विद्यमान जो अनुस्वार
त्या समय पुढे अस्ता परसवर्ण विकल्पे करून होय॥ त्वङ्करोषि॥
त्वंकरोति॥ मः॥ राजि॥ समः॥ की॥ किंबंत राजेति शब्द पुढे अस्ता
समशब्दाचा जो मकार त्यास मकारच होय॥ सम्राट्॥ हे॥ मपरा॥
वा॥ मआहे परस॥ पुढे जो स असा जो हकार तो पुढे अस्ता मकार
जो त्यास मकार विकल्पे करून होय॥ किंमूलयति॥ किंमूलयति॥

१३

यबलपरे। यबलाः। वा। यबलपरेहकारेयबलावास्यः। यबलपरहका
 रपुठेअस्तामकारजोत्यासयबलओदेशविकल्पेकरुनहोत। किमुद्यः।
 किंद्यः। किंवहलयति। किंहुलयति। किंलुहलयति। किंदादयति। किंदादयति। नप
 रानः। नआहेपुठेजासअसाजोहकारतोपुठेअस्तामकारासनकार
 विकल्पेकरुनहोय। किंरुहोते। किंरुहोते। उः। सि। धु। उकाराहनुपु
 ठिलबाजोसकारत्यासधुटअसोआगमहोयविकल्पेकरुनहोत।
 आद्यंतो। टकिंतो। टित् अंणखीकिंतुहजाससांघितलेआहेतत्या
 सक्रमेकरुनहोय। टित् आद्यावयवहोय। किंतु
 जोतोअंत्यावयवहोय। षडुसंतः। षउतुसंतः। इः। कुं। कुं। कुं। श
 रि। उकारणकारजेयांसकेकुटुकुहेओगमविकल्पेकरुनहोत।
 शरिशारपुठेअस्ता। प्राउं। षष्ठः। सुगेणषष्ठः। नः। च। नांतजेशब्द

मध्य-को.

१४

स्वरूपत्याहूनपुढिलचा जो सकार त्यास धुट असा आगम होय विकल्पे
करून। सनः सः। सनः सः। शि। तु कू। पदं ती विद्यमान जो न कोर त्यास
शकार पुढे अस्ता तु गागम विकल्पे करून होय। सनः शंभुः। रूपाणां
मिहा तु कू छल्वचेलो पानां। विकल्पना ता हा उ सरार्ध साला आता पूर्वा
र्ध। अचछो अचछा अचछा अचछा वि ति च तुष्टयं। हा पूर्वा र्ध साला।
इह अस्मिन् प्रकरणे तु कू छल्वचेलो पयांचा विकल्पास्त व उदा
हरण च तुष्टय जाणा वेंग। ड. मः। रु स्वात्। अचि। ड. मुणू। नित्यं।
रु स्वाहून पर जो ड. म त दंत जें पद त्याहून पुढिलचा जो अच त्यास
नित्य ड. मुट असा आगम होय। प्रत्य ड. आत्मा। सुगण ईशः। सन
अच्युतः। सौ। परि। उप। एभ्यः। करोती। भूषण। सुट् स्यात्। १४

संपरिउपयाहून्करोतिशब्दपुटेअस्तासुडागमहोयाभूष
 णार्थवाच्यअस्तासमः।सुटि।समराब्दासुअसाआदेशो
 यसुटपुटेअस्ता।अत्र।अनुनासिकः।पूर्वस्य।तु।वा।अत्रया
 रूपकरणाचेठाईरुहूनपूर्वजोत्यासअनुनासिकविकल्पेक
 नेहोय।अनुनासिकोत्तरः।अनुस्वारः।अनुनासिकनाही
 झालीत्यापक्षीरुहूनपूर्विलचाजोत्याहूनपुटेअनुस्वाराग
 महोय।स्वरवसानयोः।विसर्जनीयः।स्वरअथवाअवसा
 नअस्तापदांतीविद्यमानजोरेफत्यासविसर्गहोये।इति
 श्रामे।संपुंकानो।सः।वक्तव्यः।संपुंकान्एतत्संबंधीजोरेफ

पुटेअ
 स्ता

मध्य-को-

१५

हंति एव
पद आह

त्यास सकार बोलावा। सम्कर्ता। समस्कर्ता। ससंस्कर्ता। ससंस्क
र्ता। संस्कर्ता। पुमः। खयि। अमपरे। अमपरखयपुटे अस्तापुम
शब्दासरु होया। पुमको किलः। पुसंस्को किलः। पुस्को किलः। नः।
खवि। अप्रशान्। अमपरखयपुटे अस्तानांतजे पदत्यासरु होया।
विसर्जनीयस्यासः। विसर्जनीयजोत्यास सकार होय खरपुटे
अस्ता। चकिं नूत्राय स्वा। चकिं स्त्राय स्वा। चकिं स्त्राय स्वा। अप्र
शान्किं। प्रशान्तरतनोति। प्रशान्तराब्दासन होया। पदंतस्येति
किं। हनूति। एथेन शाले। नूत्राये। नूत्रे असो जो शब्द त्यासरु
विकल्पे करुन होय पकारपुटे अस्ता। कुपुवोः। कः। पो। चाक
वर्ग अथवा पवर्ग पुटे अस्ता विसर्गी स अः क अथवा अः प हे होता चका १५
जिह्ममूलीय उपध्मानीय

रेकस्तु नृविसर्गही होय। नृनृपाहि। नृदं५ पाहि। नृदं५ पाहि। नृदं५ पाहि। नृदं५ पाहि। नृदं५ पाहि। नृदं५ पाहि।
 पाहि। सः अपदादो। विसर्गो ससकार होय पदाचे आदिभूत न सती
 ल असे कवर्ग पवर्ग पुटे अस्ता। पय सुपाश। पयस्कल्पे अनवयस्य।
 इति। वाच्ये। अवयवसंबंधी नसेल असा जो विसर्ग त्यास सकार होय। प्रातः
 कल्पे। प्रातः हा विसर्ग अवयवाचा आहे। नृदं५ पाहि। काम्ये। रो रे वा इति।
 वाच्ये। काम्ये च प्रत्यय पुटे अस्तारु संबंधी जो विसर्ग त्यास च सकार होय।
 इह नृगीः काम्येति हारुचा विसर्ग नाही। इणः। षः। इणा हू नृ पुर जो वि
 सर्ग त्यास षकार होय। पूर्वविषय ल अपदादि क्व कवर्ग पवर्ग पुटे अस्ता।
 सर्पि सुपाश। सर्पिष्कल्पे। कस्कादिषु। च। कस्कादिगणाचे ठाई इणा
 हू नृ पुढील ना जो विसर्ग त्यास च षकार होय। अन्यासन होय। कस्क
 स्। मग कर कर साले। कः कः साले। धनुष्कपालं इत्यादि। कस्कादिक्

मध्य-को.

१६

हा आकृतिगण होय। तस्य। परमांशे डितं। द्विरुक्तं जें द्विरुच्चारितं जेया
चा जो परभाग तो आंशे डित संस्कृत होय। कान्। आंशे डितं। कान्। शब्दा
चा जो नकार त्या सरु होय। आंशे डित शब्द पुढे अस्ता। कान्। कान्। कां
स्कां। ए। च। ह्रस्व जो त्या स छकार पुढे अस्ता तुगा गम होय। अछ।
अशी स्थिति। अछ। आड। माडोः। च। आड। अणखी माड। यां स तुक्
असा आगम होय छकार पुढे अस्ता। आछ। दयति। मोछि दत्त। दी
र्घात्। दीर्घा ह्रस्व छकार पुढे अस्ता तुगा गम होय। म्लेछति। स्थिति।
म्लेछति। पदांतात्। वा। पदांती विद्यमान जो दीर्घ त्या ह्रस्व का
र पुढे अस्ता तुगा गम विकल्पे करु होय। लक्ष्मी छया। स्थिति।
लक्ष्मी छया। इति हलसंधिः॥ ॥ विसर्जनीयस्य। सः। वि

१६

कषयोगेश्वरः।

सर्जनीयाससकर. खर^{पु}टे अस्ता विष्णुसूत्रात्ता। स्थिती. विष्णुसूत्रात्ता। श
पर। विसर्जनीयः। शरपर खरपुटे अस्ता विसर्जनीयास विसर्गचहो
यअन्यनहोय। कसूत्सरुः। स्थिति. कः. लरुः। घनाघनसूक्ष्मभणः।
ना। शरि। शरपुटे अस्ता विसर्गस विसर्गविकल्पेकरुहोय। हरिस्
शेते। हरिस्ते। खरपर। शरि। वा। विसर्गस्य। लोपः। वक्तव्यः। ख
रपरशरपुटे. विसर्गचो लोपविकल्पेक. वा। हरिस्स्फुरति। हरिः
स्फुरति। ससजुषोः। रुः। पदांती विद्यमानजोसकारेअणखीस
जुषशब्दजोत्यासरुहोय। जस्त्वपावलेहोतेत्याचाअयवाद। अतः।
रोः। अपुतात्। अपुतो। अपुतजोअतल्याहनेपरजोरुत्यासउका
रहोय। अपुतेअतपुटेअस्ता। शिवसूत्रार्थः। स्थिति. शिवोच्यः।

मध्य. को.

भो. पत्वं. लो. यलोपः॥

उत्पपक्षेभ्यवागंतइतिभाभूर
एतद्व्यंजतिग्रहं

११

अतः किं। देवासअत्र। देवाअत्र। अपुतेति किं। श्वसआगंता। श्वआगं
ता। अपुतातु किं। एहि सुस्त्रोतसअत्रस्नाहि। पुतरास्त्रेजेते असिद्धाह
तेहा अकोराह न पुटिल च आह अ पुता रिति विप्रण सामर्थ्यात् पुतास
असिद्धत्वं ना ही। एहि सुस्त्रोता अत्र स्नाहि। अपुतेति किं। तिष्ठतु पयस
आश्रितो दत्ता। हशि। च। अपुतजो अत त्याह न पुटिल जोरुत्या सउ
होय हश पुट अस्ता। शिवसर्वं घः। शिवोर्वं घः। भो भगो अघो अप
र्वस्य। यमसि शि। भो पूर्वं भगो पू. अघो पू. अवर्ण पू. जोरुत्या सउहो
य अशि अश पुट अस्ता। योः। लघु प्रयत्नतरः। शोकटा यनस्य।
पदांती विद्यमान जेय कारवकार लो सुलघु प्रयत्नतर असे जेय का
रवकार हे होत विकल्पे करुन अश पुट अस्ता। जो च उच्चारणा च
होत

११

अरुणपू
र्वक

ठाई जिहेचा अग्रउपाग्रमध्यमूलयाचेठाई शैथिल्याप्रतिपावतो तो ल
घुप्रयत्नतर। **आतः।** गार्ग्यस्य। ओकात्परस्य ओकाराह नपुठिल
पदांतीविद्यमान अलघुप्रयत्नवैत असा जोयकारत्याचा नित्यलो
पहोया। भोसू अच्युता। भोय अच्युता। स्थितिः लघुप्रयत्न पक्षे भा
यच्युता। पदांतस्य किंतोय एवढे पद। हलिः सर्वेषां। भोभगो अघो
अपूर्वस्य लघु अलघु उच्चारण आह। ज्याचे असा जोयकारत्या
चालीपहोय हलपुढे अस्ता सर्वाच्या मती। भोसू देवाः। देवास्य
ति। स्थितिः **रः।** असुपि। अहं शब्दास रफादेशो होय न तु सुपि
सुपपुढे न स्ता। अहं अहः। अहं गणः। असुपि किं। अहं
भ्यां। अत्र एथे अहं यासूत्रे क र्त्तृत्वं बोध्यं। **अहं**।

मध्य. को.

१८

अहन् शब्दासरुहोय पदं तं अस्ता। अहन् शब्दासरुपरात्रिरथं तरहे
शब्द पुट अस्ता सुत्व बोध्यं। अहन् रूपं। मतमहन् रात्रिरेषा। एक
देशं करुन् जो विकृत तो अनन्यवत् अन्य न हो। यान्याये करुन् अहो
रात्रहा प्रयोग जाणावो। अहन् रथं तेरं। अहो दि कुजे शब्द लां स
पल्यादि कु शब्द पुट अस्ता रेफा देश विकल्पे करुन् होय। अहन्
पतिः। पक्षी विसर्ग होई ल पक्षी उपध्यानीय होई लः। रि। रेफा चा
रेफ पुट अस्ता लोप होय। दु लोपे। पूर्वस्या दीर्घः। अणः। लोपनि
मित्त कटु कार अथवा रेफ पुट अस्ता पूर्विल चा जो अण लास
दीर्घता होय। पुनरु र मते। पुनरु मते स्थितिः। अणः किं। वटः।
मनसुरयः एथे सुत्वे केले अस्ता हशिचे त्या सूत्रे करुन् उलपा

अ-रु-का
रः-अणून

१८

वले अस्तारोरिया सूत्रे कस्तुन लोप पाबला अस्ता। ययो द्वयोः ज्या दोघा
 चे अन्यत्र चरितार्थयोः अन्यत्र शाले असे हो साते एकत्र प्राप्ति सः ता
 तुल्यबलविरोधः। तुल्यबलविरोध अस्ता जे परको र्य ते हो इला पूर्व
 त्रासिद्धं या सूत्रे कस्तुन रोरिया सूत्रा स अ सिद्ध व आह सः उल्लेख होई
 ल। मनोरथः। एतत्तदोः। सुलोपः। अकः। अनय समा स। हलि।
 ककार घटित न सती ल असे जे एतत्तदो अणखी त छ व्द त्या हुन
 पुढिल चा जो सुनाम सकार त्या चालोप होय नय समा स न स्ता। एष
 स विष्णुः। ससंशुभुः। स्थिति० अकोः किं। एष क सरुदः। अनअ
 समास किं। अससंशिवः। एथे नय समास आहो। एष स अत्र। सः। हलिकिं
 अचि। लोप। चेतो पाद पूरणं। सस्य चो जो सकार त्या चालोप

मध्य. को.

के का

१९

होय अचपुटे अस्तालो पकेल्याने पादपूर्ति होत असली तर । ससुशमाम
विटि प्रभृति । ससु एषदा . मः । ससु एषदा . ससु एषकणे . ससु एषभीमो .
बलः ॥ इति विसर्गसंधिः ॥ ॥ अर्थवत् । अधातुः । अप्रत्ययः । प्राति
पदिकं । धातु न हे प्रत्यय न हे प्रत्ययां त ही न हे असे जे अर्थवत् शब्द
स्वरूप जे ते प्रातिपदिक संशंक होय । कृतद्धित समासाः । चाकृष्ट
तस्य . कृतप्रत्ययां त तद्धित प्रत्ययां त समासभ्य समास संशंक
जे ते ही प्रातिपदिक संशंक होय । सु । ओ । जसु । प्रथमा । अम् । औद् ।
शसु । द्वितीया । ट् । भ्यां । भिसु । तृतीया । डे . भ्यां । भ्यसु । चतुर्थी । ड . सि ।
भ्यां । भ्यसु । पंचमी । ड . सु । ओसु । अंम् । षष्ठी । ङि । ओसु । सुपू । सप्तमी ।

१९

हे स्त्री प्रत्यय

द्विवचन
न प्रसूति

आप्राप्तिपदिकत्वात्त आबंत अणस्वीप्तातिपदिकत्वाहंनपुठे स्वा
दिकप्रत्ययहोत्र। सुपेप्रत्याहारीचींतीतीनतीनवचनेतीप्रत्येकं एक्ये
क्येतेकाप्रति एकवचनद्विवचनसंज्ञकहोत्र। द्विकयोः द्विवचने
कवचने। द्विवचनद्विवचनहोय। विरामः। अवसानं। वर्णाचा जो अभिवाचतो
एकवचनद्विवचनहोय। विरामः। अवसानं। वर्णाचा जो अभिवाचतो
अवसानसंज्ञकहोय। अयोगवाहनां। अस्य। उपरि। शर्षु। चा
इति। वाच्यं। अयोगवाहजेयाचा अकाराहंनपुठे स्थितिजाणावी
शरप्रत्याहाराचे ठाई ही पाठजाणावा। यम अनुस्वारविसर्ग
जिह्वा मूलीय उपध्मानीय हे जे ते अयोगवाह संज्ञक जाणावे। तेन
त्याकारणोक्तविसर्गसंयत्त आले। न अनविद्यायासूत्रे न द्वित्वात्

मध्य-को.

२०

रामः विसर्गसहीद्विबाले। सरूपाणां। एकशेषः। एकविभक्तौ। एकवि
भक्तिपुटे अस्ता। तींशब्दस्वरूपे समानपाहिली आहे तर ते घां त्या मध्ये ए
कच राहे अन्ये लुप्यंते। प्रथमयोः। पूर्वसवर्णः। अकारान्न प्रथमाद्विती
या संबंधी अचू पुटे अस्ता पूर्वपरस्थानी पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश
होय। असे पावले अस्ता। ने। आता इति। अवर्णाह न इचू पुटे
अस्ता पूर्वसवर्ण दीर्घ न होय। वृद्धिरेचि। रामो। बहुषु। बहुव
चनं। बहुत्वविवक्षा अस्ता बहुवचने होय। चुट्ट। प्रत्ययाचे आ
दिभूत जे चवर्ग टवर्ग ते इत्संज्ञक होत। विभक्तिसंज्ञे। सुपूतिङ्
जे ते विभक्ति संज्ञक होत। ना। विभक्तौ। तुस्माः। विभक्ती
चा ठाई स्थल राहिले तेवर्ग अणस्वी सकार मकार ते इत्संज्ञक

२०

न होत। रामाः। एकवचनं संबुद्धिः। संबोधनाचे ठाई जी प्रथमा ती
 चेजे एकवचन ते संबुद्धि संज्ञक होय। यस्मात्। प्रत्ययविधिः। तदा
 दि। प्रत्यय। अंग। जो प्रत्यय या हून करिजे तो तो प्रत्यय पुढे अस्ता तदा
 दि कुजे शब्द स्वरूप ते अंग संज्ञक होय। एङ्। ह्रस्वात्। संबुद्धेः।
 एङ्। त ह्रस्वात् असेजे अंग त्या हून पुढिले चो जो ह्रस्वा चो लोप
 होय। संबुद्धी चजर असेल। हे राम। हे रामो। हे रामाः। अग्नि पूर्वः।
 अका हून अमू संबंधी अचू पुढे अस्ता पूर्व पर० पूर्व रूप एकादेश होय।
 रामं। रामो। लशकु। अत उचिते। तद्वितवर्जं जो प्रत्यय त्याचे आदि
 भूत जे लश अण री क व ग ते इ संज्ञक होत। तस्मात्। शसः। नः।
 पुंसि। पूर्व सवर्ण दीर्घा हून पुढिले चो जो शस् संबंधी सकार

मध्य.को.

२१

त्यासनकारहोयपुंलिंगाचेठाई।अङ्कुपूवाङ्.नुम्व्यवाये।अपि।अ
रेकवर्गआङ्.नुम्याहीकरूनव्यस्तोत्त।भिन्नेभिन्नेअणखीजितके
मेळालेतितकेतीहीकरूनव्यवधानअस्ताहीरेफषकाराहूनपुढि
लचाजोनकारत्यासणकारहोय।समानपदसि.एकपदाचेठाई।
इतिप्राप्ते।असेपोवलेअस्ता।पदंतस्या।नकारासणकारनहोय।
रामान्।टाङ्.सिङ्.सां।इनास्याः।अदंतजेअंगत्याहूनपुढिल
चेजे।टादिकूत्यांसूदनआतूअणखीस्यहेआदेशहोतू।णत्वं।क्रमेकरून
रामेण।सुवि।च।यआदिकूसुपुढेअस्तो।अदंतजेअंगत्यास
दीर्घताहोय।रामाभ्यां।अतः।भिसः।ऐसू।अदंतजेअंगत्याहून
पुढिलचाजोभिसूत्यासऐसूहोय।अनेकालत्यासूचीदेशी।व
दिःरामैः।ङ्.।यः।अदंतजेअंगत्याहूनपुढिलचाजोङ्.त्यासय २१

होय। स्थानिवत्। आदेशः। अनन्विधौ। आदेशो तो स्थानिवत् हो
 य। स्थानिसंबंधीजो अलुत्ता समानू नू कार्य कर्तव्य न स्ता। रामाय।
 रामाभ्यां। बहुवचने। सलि। एत। श्लोदि कुबहुवचन सुपु पुठे अस्ता
 अदंतजे अंग त्यास एकार होय। रामेभ्यः। सुपि किं। पचध्व। वा। अव
 साने। अवसान पुठे अस्ता श्लो स चर विकल्पे करुन होय। रामात्। चरत्वं।
 जसं रामाद्। रामाभ्यां। रामेभ्यः। रामस्य। ओसि च। अदंतजे अंग त्यास
 एकार होय। रामयोः। रुस्व नद्यापः। नुट्। रुस्वांत न घंत अणस्वी
 आवंत अरुं जे अंग त्यास हन पुठि लुच्चा जो आमु त्यास नुट् असा
 ना मि। आगम होय। नाम पुठे अस्ता अजंतजे अंग त्यास दीर्घता होय। रा
 माणां। एत्वे कृते। आदेश प्रत्यययोः। इणू कवर्ग हन पुठि लु अप
 रामे। रामयोः। एकपदा

मध्य-को.

२२

तंतस्य आदेशात् प्रत्ययावयवश्च यस्य सस्तस्य मूर्धन्यादेशः। इषाक
वर्गाहने पुष्टील अपदांती विद्यमान आदेशीरूप अथवा प्रत्यया
या अवयवी भूत असा जो सकारत्या सषकार होया। ईषद्विर
त प्रयत्न वेत असा जो सकारत्या सतसा सषकार होया। रामेषु।
या प्रकारें कसून कृष्णादिकु अदंत जाणावे। सर्वदीनि।
सर्वनामानि। सर्वदिकु जीराब्दस्वरूपे ती सर्वनाम संज्ञ
कहोत। सर्व। विश्व। उभे। उभय। उत्तर। उत्तर। अन्य। अन्य
तर। इतर। वेत्ता। वे। नेम। सम। सिम। पूर्व परावर। दक्षिणे।
तेरा पराधराणि। व्यवस्थायां। असंज्ञायां। स्व। अज्ञातिध
हीराब्दस्वरूपे जीती। व्यवस्था अस्ता संज्ञानस्ता।

२२

नारव्यायां। अंतरं। बहिर्योगो। पसंव्यानयोः। लद। तद। यद। एतद।
 इदम्। अदसू। एक। द्वि। मुष्मत्। अस्मत्। भवतु। किम्। जसः। शी।
 अदंतजो सर्वनाम त्याहन पुटिल च जो जे सुखी सरी होया। अने का
 ले त्यास्तव सर्वा देश होया। सर्वे। सर्वनामः। स्मे। अदंतजो सर्व
 नामा त्याहन पुटिल च जो उ। त्या सस्मे होया। सब स्मे। उ। सि
 ओः। स्मात् स्मि नो। अदंतजो सर्वनाम त्याहन पुटिल च जो उ। सि
 अणखी डि। त्या सस्मात् स्मि नू ह होत। सर्वस्मात्। आमि। सर्व
 नामः। सुट्टे। अवर्णतजो सर्वनाम त्याहन विहित जो आम्
 त्या सुसुट्ट आगम होया। एत्व बत्वे। सर्वे षां। सर्वे स्मि नू। शेषं राम वर
 या प्रकारे क रून् विश्वादि कू अदंतशाणा वे। उम राब्द जो तो निस

मध्य. को.

२३

द्विवचनान्त होय। उभो २ उभाभ्यां ३ उभयोः २ तस्य ज. त्याचा इह
या सर्वादि कु गणाचा हाई पाठ जो तो अ कचे प्रत्यये वेडत सणू
न। उत्तर उतम हे प्रत्यय आहेत। प्रत्यय ग्रहणे तदंत ग्रहणे स्या
परिभाषे करून प्रत्ययांत घ्यावे। नेम साध्या स अर्धरूप अर्थ
सर्वनाम संज्ञा जोणाची। सम या साध्या स सर्वपर्यायरूप अ
र्थ सर्वनाम०। तुल्य रूप अर्थ सर्वनाम. न ना ही। समानां
असे सटले सणू न। पूर्वपर० या। एवां स. या साध्या स गणसू
त्रे करून पावली। ती संज्ञा ती नसु पुढे अस्ता विकल्पे करून
होय। पूर्वा पूर्वाः। स्वाभिधेयापेक्षो अपक्षिजे तो जो अवधिनि
आपले नाम

२

२३

स्वशब्दावेवावर्तमानातिथि न आत्मा आत्मीय।

३ संज्ञा

ममज्ञो तो व्यवस्था शब्दार्थ। व्यवस्था असे कांल. गायक जे ते दक्षिण
ल. कुशळ। या अर्थी अवधी नाही। संज्ञा न स्ता असे कांल. कुरु
जे ते उत्तरल. उत्तर देश स्थ ते हों वाचक ल. सर्व नाम. नाही। स्व म०
मां। एति अणखी धन या हने अन्य जे अर्थ त्या अर्थी स सा गणार
असा जो स्व शब्द त्या स पावली जी संज्ञा गण सूत्रे करून सा ती सं
ज्ञा जी ती ज स पुढे अस्त विकल्पे करून द्या। स्वाः। आत्मीयाः आप
ले। आत्माने ल. आपण। एति धन वाचि न स्ता। स्वाः। स्व शब्दा
वे अर्थ स्ताति अणखी अर्थी वाचाचक। अंतरं० योः। अंतरं री
व्यास व्यास रूप अर्थी परिधानीय रूप अर्थी जिण सूत्रे करून पा
वली जी संज्ञा ती ज स पुढे अस्त विकल्पे करून होय। अंतरं। अं
तरा वा गृहाः। एति सार्थः। अंतरं। अंतरा वा शब्दकाः। परिधानीया

मध्य-को-

इत्यर्थः। पूर्वादिभ्यः। नवभ्यः। वा। एभ्यः नवभ्यः हे जे पूर्वादि कुन वशब्द
को हुन पुढील कु. सि अण रवी ति. त्यां स स्मात् अण रवी सि न हे के मे कर न वि
क० होतो पूर्वस्मात्। पूर्वात्। पूर्वस्मिन्। पूर्वे। एवं परादीनामपि। शेषं स
र्ववत्। संज्ञा भूत अण रवी उप स र्जनी भूत असे जे सर्वादि कु जे त्यां स स.
२४ म र्वना कार्य नाही। सर्वनाम कश्चित् ब्रह्मण जो त्या कारणे सर्वा य दे
हि। अति क्रांतः सर्व अति सर्वः सर्व स अति क्रम न रा हिला तो अति
सर्व तस्मै अति सर्वा य। अति सर्व स्मै असा हवा तो न साला। अंतरा
ब्दा स गण सूत्रा चेठाई पुरी वा च कुन सेल ते हा सर्वनाम संज्ञा हो
या। अंतरा यां पुरी एथे अंतराब्द जो तो पुरी वा च क आहो। तृती
या समासा चेठाई अण रवी तृतीया समासार्थ वाक्या चेठाई ही सर्वना
म संज्ञा न होय। मो स पूर्वा य हा तृतीया समासा। मा से न पूर्वा य ही तृती

२४

यासमासार्थवाक्यहोय। हं हं। च। हं हं। चे ठाई सर्वनाम संज्ञाना ही। वर्णा
अमेतराणां। विभाषा जसि। जसपुटे अस्ता हं हं। चे ठाई री भाव रूप
कार्य कर्तव्य अस्ता सर्वनाम कार्य जेतें विकल्पे करन होय। वर्णा अमे
तरे। वर्णा अमेतराः। प्रथम चरम तया ल्या धर्क ति पय नेमाः। च।
हेशब्द जेयां स जसपुटे अस्ता सर्वनाम संज्ञा विकल्पे करन होय।
प्रथमे। प्रथमाः। चरमे। चरमाः। तय प्रत्ययः। तय प्रत्ययां त घ्यावा।
द्वितये। द्वितयाः। शेषं राम वत्रा निमो। नेमाः। शेषं सर्व वत्र। तीयस्य।
तिसु। वा। तीय प्रत्ययां तासु द्वि-त प्रत्यय पुटे अस्ता सर्वनाम संज्ञा वि
कल्पे करन होय। द्वितीयस्यै। द्वितीयाय। एवं तृतीयः। निर्जरः। नि
जर। ओ अशी स्थिति अस्ता। जरायाः। जरसु। अन्यतरस्यां। जरा

मध्य-कौ.

२५

शब्दासजरसआदेशहोयविकल्पेकरुनअजादिकुविभक्तिपुटेअ
स्ता। पदाधिकाराचेईअंगाधिकाराचाठाईजेकार्यउत्ततेंका
र्यत्यासहोयअणखीतदंतासहीहोया। ज्याचेउच्चारणत्यासआ
देशहोय। एकदेशेकरुनजोविकृततोअन्यनह्यान्यायेकरु
नजरशब्दासजरसआदेशहोय। निर्जरसो। निर्जरसःइत्या
दि। पक्षेजरसआदेशनाहीत्यापक्षीरामवतर। इलादिकुविभ
क्तिपुटेअस्ताहिरामवतर। जेकार्यज्यासमानूनसालेतेंकार्य
त्याचेविघातकरुनके। यान्यायेकरुनजरसआदेशनसाला।
निर्जरैः। पदनामासहनिरीसनयूषनदोषनयकनरा

२५

कनउदन्नास नृशस्मभतिषु। पाददंतनासिका मासहृदयनि
 शाअस जयूष दोषयकतरी कृतउदकआस्य एसां पदादयआ
 देशस्युः। शीसा दोषा। पदः। पादान्। मासः। मासान्। विश्वपाः।
 दीर्घात्। नसि। च। दीघाह नृजसपुटे अस्ता अथवाइचपुटे अस्ता
 ही पूर्वसवर्ण दीर्घनहोया विश्वको। विश्वपाः। हे विश्वपाः। हे वि
 श्वको। हे विश्वपाः। सुट्। अनपुंसकस्य। स्वादिकुजीपंचवच
 ने जीती सर्वनामस्थाने सं संक होत्। अक्ती वस्येनपुंसका
 चीनाही। स्वादिषु। सर्वनामस्थाने। कप्रत्ययआहे अवधि
 ज्यां सप्तनियम्यौ स एसे अणि असर्वनामस्थाने सं संक अ
 सजे स्वादिकुते पुटे अस्ता पूर्विलचें जें रा व्यस्वरूप ते पदसंशक

मध्य-को.

२६

होय। यवि। मं। यकारादिक अथवा अजादिक कप्रत्ययावधिक
असर्वनामस्थान असे जे स्यादिक ते पुढे अस्ता पूर्विल चे जे रो
बस्वरूप ते मसंशक होय। आकारांतर। एका संज्ञा। या सूत्रा
पासून ककाराः कर्मधारय; या सूत्रा ~~संज्ञा~~ चा पूर्वाजि संज्ञा
जासो पावल्या त्या संज्ञा एकास एकच होय। अहो ध्यायी चा
क्रमेक सूत्र जी पर असेल ती होय। अथवा जी अनवकारा
सु. अ-चरितार्थ असेल ती होय। आतः। धातोः। आकारां अलौक्य
ते जो धातु तदंत जे मसंशक अंग त्या चालो प होय। विश्वपः।
विश्वपा। विश्वपाभ्यामित्यादि। एवं शंख ध्या देयः। धातोः किं।

२६

हाहा३ हाआकारांत धा तुनेहे। ए सवर्ण दीर्घः हाहाडे वृद्धिः हाहे।
 उ. सिउ. सोः सवर्ण दीर्घः हाहाः। ओसि वृद्धिः हाहोः। डि. आहुणः।
 हाहे। आतः धातोः असो योग विभाग केलो या स्तव धा तुने स्त।
 हीलो पक्ष चित्र होया। श्रीः। हरिः। हरी। नसि। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व।
 अंग त्या सगुण होया। हरयः। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व।
 सगुण होया। संबुद्धि पुढे अस्ता। हे हरे। हरिं। हरी। हरीन। गोपः।
 धि। असि। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व।
 नक होया। आडः। न। अस्त्रियां। धि। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व। स्व।
 जो आडः। त्या सना होया। अस्त्रियां। स्त्रि। लिं। गी। न होया। प्रोची। नाचे म
 ती आडः। असो दास स्रुणा वें। हरिणा। हरिभिः। घेः। डि. ति। धि। स्व।

मध्य. को.

२९

सकजे अंग त्यास डि. तसु पु पु. टे अस्ता गुण होय। हरे। हरिभ्यां। ह
रिभ्यः। गुणे रुते। उ. सि उ. लोः। च। ए उ न ह न उ. सि उ. स सं वंधी अ न
पु. टे अस्ता पूर्व पर स्थानी पूर्व रूप ए का देश होय। हरेः। हरिभ्यां।
हरिभ्यः। हरेः। हयोः। हरीणां। अ. ते। च। घेः। इकार उकारा ह न
पु. टि ल च जो डि. त्यास ओ होय अण र्वी धि सं स का स अ ते हो
य। हरी। हयोः। हरिषु। एवं के व्या दयः। अ न उ. अ लो। स खि
रूप जे अंग त्यास अ न उ. अ सा आ देश होय अ सं बु डि सु पु टे
अस्ता। अ लः। अं त्या त्र। पूर्वः। उपधा। अं त्या द लः। पूर्वः। उपधा
सं स त्या त्र। अं त्या जो अ लू त्या ह न जो पूर्व तो उपधा सं स क होय।
सर्व नाम स्थाने। च। अ सं बु की। नो त जे रो व्य स्वरूप त्या ची जी उ

२९

पधातीस दीर्घता होय असं बुद्धि सर्वनाम स्थान पुढे अस्ता। अष्ट
 त्तः। एकाल प्रत्ययः। एकाल जो प्रत्यय तो अष्ट त्त संज्ञक होय।
 हल व्याप्यः। दीर्घात्। सुतिस्य षत्तः। हल। हलंता हन पुढील
 दीर्घ जे ३। अण खी ओ पू त दंता हन पुढील सुती सी ए त त सं
 बंधी जें अष्ट त्त हल व्याचो लो प होय। प्रत्यय लोपे। प्रत्यय ल
 क्षणा। प्रत्यया चो लोप झाला अस्ता ही प्रत्यया श्रित जें कार्य
 ते होय। न। लोपः। प्रातिपदिकांतस्य। प्रातिपदिक संज्ञक
 जें पद त दंत जो नकार व्याचो लो प होय। सखा। सख्युः। अ
 संबुद्धौ। सखि रूप जें अंग त्या हन पुढील चें संबुद्धि वज्र जें स

मध्य-को-

२८

वर्नामस्थानतेजिद्वत्तुहोय। अचः। जिमिति। अजंतजेअंगत्यासद्वि
होय। अत्रितुप्रत्ययेपुठेअस्ता। सखायो। सखायः। हसखे।
सखीनू। सख्ये। ख्यात्तु। परस्य। खिअणखीति शब्दकृतसु-
कलाआहेयणादेशजोतोजांसअसेजहस्वअणखीदीर्घखी
शब्दतीशब्दसाहूनपुठिलचाजोउ। सिउ। ससंबंधीजोह
स्वअकारत्यासउत्स्यातहस्वउकारहोय। सख्युः। सख्युः।
ओतु। हस्वइकाराहूनपुठिलचीजीडि। त्यासओहोय।
शेषंहरिवत्। पतिः। समासा। एव। पतिशब्दाससमासा
चेठाईचधि संज्ञाजाणावी। पत्या॥ पत्ये। पत्युः॥ पत्यो॥

२८

शेषं हरिवत्। समासाचे ठाईतरभूपतये। कतिशब्दः नित्यं बहु
वचनोतः। बहुगण। बहु। उति। संख्या। एते हे जे संख्या संज्ञक
होया। उति। चोउ प्रत्ययांत जो संख्या वाचक शब्द तो षट् संज्ञ
क होया। षट्भ्यः। लुक्। षट् संज्ञक जे शब्द त्याहून पुढिलचे
जे जस अणखी रासा त्या चो लुक् होया। प्रत्ययेस्य। लुक् श्लु
लुपः। लुक् श्लु लुप हे जे शब्द या शब्दाही करून कृतं केलं
जे प्रत्ययाचे अदरीन तें तत्तल संज्ञक होया। जसिचे तिगुणे
प्राप्ते। न। लुमतांगस्य। लुमता शब्दे करून लोपसाला अ
स्ता तन्निमित्तक जे अंग कार्य तें न होया। कतिश। कतिभिः।

करतो तो पपीःसूर्यः। पप्यौ। पप्यः। हे पपीः। पपीं। पपीन। प
 प्यं। पपी। पपीषु। एवंप्रकारे करुन वा तस्यमादिकुरा
 वृजे तेजाणावो बह्मः श्रेयस्यो यस्य सः बह्म श्रेयसी। कदीर्घ
 अंत आह लघूनां हलं आदि सूत्रे करुन सुचालो पसीला।
 बह्म श्रेयसी। य। स्त्र्याख्यौ। नदी। नित्यस्त्रिंशि जीविद्यमा
 न असे जे ईकारे उकार ते नदी संस्कृत होत। प्रथमलिंग
 ग्रहणं। च। पूर्वी जो स्त्रीवाचकुरावृत्त्यास उपसर्जनसूत्र-गौ
 णत्वं अस्ताही। नदीत्वसूत्र-नदी संज्ञा जाणावी। अंबार्थ न
 द्याः। रुखः। अंबार्थ जे रावृत् अणखी न घंत जे रावृत्त्या

मध्य-को.

३०

सहस्रता होय। संबुद्धि पुढे अस्ता। हे बहुश्रेयसि। आणू। नद्याः।
नद्यंत जेशब्द स्वरूप त्या हून पुढिले ची जी डि. द्वचने लोस आ
उगम होय। आटः। च। आटा हून अच पुढे अस्ता पुर्व परस्था
नी वृद्धि होय। बहुश्रेयस्ये। बहुश्रेयस्योः। २। बहुश्रेयसीनां।
उः। आम्ना नद्यां मी भ्यः। नद्यंत हून आबंता हून अणखीनी
शब्दा हून पुढिले ची जी डि. तीस ओम होय। बहुश्रेयस्यो। शे
ष्यपी वेत्र। अतिलक्ष्मीः। शेषं बहुश्रेयसी वेत्र। प्रधीः। अ
वि। श्रुधातुम्बुवां। य्वाः। इयडु. वडु। श्रुप्रत्ययौ तजेशब्द
स्वरूप अणखी इवर्ण उवर्णित जातुम्बु असे जे अंग त्या
स इयडु. उचडु. होत। अजादिक प्रत्यय पुढे अस्ता। इति प्राप्ते
धातु अणखी

३०

एः॥ अनेकाचः॥ असंयोगपूर्वस्य। धातूचेने अवयवत्वाचा जो सं
योग तो पूर्वी नाहीं त्यास असंयोगाचा उवर्णन तदंत जो धातु अणखी
तदंत जें अनेकाच अंग त्यास यण होय। अजादिक प्रत्यय पुढे
अस्ता। प्रध्यो। प्रध्यः। प्रध्यः। प्रध्यः। प्रध्यः। शेषं पक्षीवत्। ए
वं ग्रामणीः। इति तु डि। पुढे अस्ता तर ग्रामण्या। गतिः। च। प्रा
दिकृजे ते क्रियेसी योग अस्ता गति संज्ञक होत। गतिकार
काहून इतर जें पूर्वपद त्यास यण न होय। शुद्धधियो। न।
भू सुधियो। भू अणखी सुधीयांस अजादिक सुपु पुढे अ
स्ता यण न होय। सुधियो। सुधियः। इत्यादि। सुखे मिस्रतीति

मध्य-को.

३१

सुखीः। सुख्युः। सुतमिष्टतीतिसुतीः। सुतुः२। शेषं प्रधीचत। शं
मुहिरिवत्। एवं भान्वा दयः। नृज्वत्। क्रौष्टः। क्रौष्टशब्दासको
ष असा आदेश होय असंबुद्धि सर्वनाम स्थान पुढे अस्ता। नृ
तः। डि-सर्वनाम स्थान योः। नृदंत जे अंग त्यास गुण होय डि-पुढे-
सर्वनाम स्थान पुढे अस्ता। इति प्राप्ते मरुदुरानस्य नृदंत सो
नेह सांच। नृदंत जी शब्द स्वरूपे उरा नसादिके जे शब्द
त्यांस अनड-असा आदेश होय। असंबुद्धि सुपुढे अस्ता।
अपुन नृत्त च स्वसन नृनेष्टु लष्टु क्षत् होतु पोतु प्ररास्तु
णां। अबादिके जे हेयाची उपधा ती सदीर्घना होय असं
जी

३१

बुद्धि सर्वनामस्थान पुढे अस्ता। कोष्टा। कोष्टारौ। कोष्टारः। को
 शारं। कोष्टारौ। कोष्टन। विभाषा। तृतीयादिषु। अचि। तृतीया
 दिक् अजादिकु विभक्ति पुढे अस्ता। कोष्टशब्दासत्त्वचत्त्व
 कोष्ट असा आदेश होय विकल्पे कसुन। कोष्टा। कोष्टना।
 कोष्ट। कोष्टवे। क्रतुः। उत्तर। क्रतुं तजे अंगुल्या हुनउं सिउं
 सूत्रे बंधी अत्र पुढे अस्ता पूर्व परस्थानी उत्तर असा एका
 देश होय। र पर होय। सत्त्व। सत्त्व। रेफा हुन पुढिल चा जो व
 र्णियां चा संयोगात् सूत्रे कसुन लोप होय तसका राचाचलो
 प होय। अन्य वर्णाचा न होय। रेफा सविस्सर्ग होय। कोष्टः। २१

प्रथमः को.

३२

कोष्ठोः। २। कोष्ठोः। कोष्ठोः। नुम अचिरं च द्वावे हे पावले अस्ता
अणस्वी नुट पावला अस्ता पूर्वदि प्रतिषेधे कं रु नुट च होय। न्याये
कोष्ठोनां। कोष्ठोः। कोष्ठोः। नु च द्वाव ज्या पक्षी ना ही त्या पक्षीनां
भुवत्। हला दो च रं भुवत्। हू हूः। हू हूः। हू हू न हू त्या दि। अति
च मू री व्या चै ठा ई तर न दी कार्य वि शेष जो णा वे। हे अति च.
मु। अति च म्बे। अति च म्बाः। २। अति च मू नां। अति च म्बा।
खल पूः। ओः। सुपि। धातू चे जे अनय व त्या चा जो संयोग
तो ना ही पूर्वी ज्या स असा जो उवर्ण त दंत जो धातु अणस्वी
त दंत जे अने का च अंग त्या स यण होय। अजा दि क सुपु पु

३२

न

हे अस्ता। खलवौ। खलवः। एवं सुल्वादयः। नभूसिधियोसिति
निषेधात् स्वयंभूः। स्वयंभुवौ। स्वयंभुवः। वर्षाभूः। वर्षाभ्वः।
च। वर्षाभूशब्दजो त्यासयण होय अजादिकु सुपू पुठे अस्ता।
वर्षाभ्वामित्यादि। दृभूः। दृभूकरपुनः। एतेत पूर्वकृजोभू
शब्द त्यासयण बोलावो। दृभ्वो। दृभ्वः। एवं करभूः। पुन
भूः। दृग्भू अणशीकाराभू हे शब्द जे ते स्वयंभुवत्। धाता।
हे धातः। धातारो। धातारः। रुवर्णाह नूपुटिल जो नका
इत्यासण लव बोलावो। धातृणां। एवं नम्रोदयः। उणादि नि
व्येन ल-उणादि सूत्रे कस्नू जे शाले ते नृत् नृत् चेत दंत जे त्याची

गवे। गोः। रायः। हलि। रै। शब्दास आकारादेश होय। हल पु
 राः। टें अस्ता। राय। रायः। राभ्यामित्यादि। ग्लौ। ग्लौ। ग्लौ। ग्लौ।
 ग्लौ भ्यामित्यादि। ॥ इत्यजंताः पुंलिंगाः ॥ ॥ अजाद्यतः।
 टा पू। अजादिकुजीं शब्द स्वरूपे अण रवी अकारांत जें शब्द
 स्वरूप त्या हून स्त्री वाच्य अस्ता टा पू होय। रमा। ओउः। आपः।
 आवंत जें अंग त्या हून पुटिल जो ओकार त्या सा शी होय। ओउः।
 असें ओकार विभक्तीचे नाम। रमा। रमाः। संबुद्धी। च। आवंत जें
 अंग त्या स एकार होय। संबुद्धि पुटे अस्ता। हे रमे। रे हे रमाः। आ
 डि। च। आपः। आ। ड। अण रवी ओसू हे पुटे अस्ता आवंत जें अं
 ग त्या स एकार होय। रमया। रमाभ्यां। रमाभिः। याट्। आपः।

मध्य-को.

३४

आबंत जे अंग लाह न पुढिल चे जें डि. द्वचन त्या सयाट असा आगम
होया वदिः। रमायो रमाभ्यः। रमायाः। रमयोः२। रमोणां। रमायाः।
रमासु। एवं दुर्गादयः। सर्वनाम्नः। स्याद्। रुचिः। च। आबंत जो
सर्वनामा लाह न पुढिल जें डि. द्वचन त्या सयाट असा आ
गम होया। आबंत जो सुरुच होया। सर्वस्ये। सर्वस्याः। सर्वयोः।
सर्वसां। सर्वस्यां। शीर्षं रमावत। एवं विश्वादय आबंताः।
विभाषा। दिक् समाम्। बहु श्रीहो। दिक् समा सबहु श्रीहीचे
हाई सर्वनामतो विकल्पे करून होया। उत्तरपूर्वस्ये। उत्तरपूर्वा
यै। अपुरी असेल. यास्तव इह न। अंतरामे न गये। तीयस्य

३४

ॐ सुभाषासूत्रे करुन सर्वनामता वा। द्वितीयस्यै। द्वितीयाये। एवं त
तीया। अंबार्थति रुस्वः। हे अंब। हे अर्के। हे अल्ले। मे काले ना हीत
असे जे उलक ते आ हे त अंती जा च्या यां सरु स्वताने। हे अंबाड।
हे अंबाले। हे अंबिके। जरा। जरसो। जरे। इत्यादि। पक्षे रमा व
ते। गोपा विश्वपावत। मतीः। मत्या। ॐ ति। रुस्वः। च। इयउ
उयउ। यांचे स्थानि भूत स्त्री शब्दा हुन भिन्न नित्य स्त्री लिं
गी विधमान असे जे ईकार कुंकार रुस्व जे उवर्ण उवर्ण ते
ही स्त्रियां स्त्री लिंगाचे ठाई विकल्पे करुन नदी संज्ञक हो
त। ॐ द्वचन पुढे अस्ता। मस्यै। मतये। मत्याः। मतेः। इडु

मध्य-को-

३५

झां। नदी संसक जे उकार उकार ल्या हन पुठिलु जी डि. ती स आ म होय।
म ल्यां। म तो। शेष हरिवत्। एवं बुध्योदयः। चिचतुराः। स्त्रियां। तिस्र
चतस्रः। स्त्रिलिङ्गा चैठार्द्ध विद्यमान जे त्रिशब्द अणखी चतुरश
ब्द ल्यां स तिस्र चतस्र हे आदेश होत विभक्ति पुठे अस्ता। अचि।
र। कृतः। तिस्र चतस्र जे शब्द ल्यां स रेफादेश होय अचपु
ठे अस्ता गुण दीर्घ अणखी उल्लयां चा अपवाद क। तिस्रः।
तिस्रभिः। तिस्रभ्यः। २। आ मिनुट। न। तिस्र चतस्र। तिस्र
चतस्र ल्यां शब्दा स नाम पुठे अस्तो दीर्घतान होय। तिस्रणां।
तिस्रषु। अजाय दष्टा पु। द्विशब्दा स अकार सला अस्ता ट

३५

पूहो वा ॥ २ ॥ द्वाभ्यां ॥ ३ ॥ द्वयोः ॥ २ ॥ गौरी ॥ गौर्यै ॥ गौर्यः ॥ गौरीं ॥ गौरीः ॥
इत्यादि ॥ एवं नद्यादयः ॥ लक्ष्मीः ॥ शेषं गौरी वत् ॥ एवं तरी तं-यादयः ॥
स्त्री ॥ स्त्रियाः ॥ स्त्रि राब्दा स इ य उ ॥ असा आदे रा हो य अजादिक
प्रत्यय पु टे अस्ता ॥ स्त्रियो ॥ स्त्रिये ॥ वा ॥ अमरा सोः ॥ अमरा स
हे पु टे अस्ता स्त्री राब्दा स इ य उ ॥ आदे रा विकल्पे क र्त्तु ने हो य ॥ स्त्री ॥
स्त्रियं ॥ स्त्रियः ॥ स्त्रीः ॥ स्त्रिया ॥ स्त्रियै ॥ स्त्रियाः ॥ २ ॥ परत्वात् ननु
स्त्रीणां ॥ स्त्रियां ॥ स्त्रीषु ॥ श्रीः ॥ श्रियो ॥ श्रियः ॥ न ॥ इ य उ ॥ उ व ड ॥
स्थानो ॥ अ स्त्री ॥ इ य उ ॥ उ व ड ॥ याची स्थिति आह ॥ इयां स असे जे इ
कार उकार ते नदी संज्ञक ने होत ॥ ननु स्त्री स्त्री राब्दा वाचूने

मध्य. को.

३६

हे श्रीः। श्रिये। श्रिये। श्रियाः। २। श्रियः। २॥ वा। आ। मि। इ। य। उ। उ।
वे। उ। या। चे। स्था। नि। भू। त। स्त्र्या। रव्यो। स्त्रि। लिं। गी। वि। द्य। मान। अ। से। जे। इ। का।
रुं। का। र। ते। न। दी। सं। दू। र्क। वि। क। ल्पे। क। रू। नू। हो। त्। स्त्रि। रा। व्यो। वा। चे। नू।
श्रीणा। श्रिया। श्रियो। श्रियां। धेनुर्मतिवत्। स्त्रियां। च। स्त्री।
वाचीजो। श्रौ। श्रौ। रा। व्यो। तो। च। जं। ता। सां। र। रवे। रूप। हो। यो। स्त्रनेभ्यः। डी।
पू। रुदंतजी। श्रौ। व्यो। स्वरूपे। अण। रवी। नां। तजी। श्रौ। व्यो। स्वरूपे। त्याहन्।
स्त्रीवाच्यअस्ता। डी। पू। हो। यो। को। णी। गो। सी। वत्। भूः। श्रीवत्। स्त्रेयं।
भूः। पुं। वत्। ना। षट्। स्वस्त्रादिभ्यः। षट्संज्ञके। जे। श्रौ। व्यो। स्वरूपे।
दिके। जे। श्रौ। व्यो। त्याहन्। डी। पू। अण। रवी। टा। पू। है। न। हो। त्। स्वस्त्रे। चेतस्तेन। तिस्र।
ना। दृ। दु। हि। त्। या। टि। मा। तृ। हे। सा। त्। जे। ते। स्वस्त्रादिकू। जा। णा। वे। स्वस्त्रा।

३६

स्वसारो। स्वसारः। माता। पितृवत्। रासुपुटे अस्तामातृः। द्यौर्गो
 वत्। रासुपुवत्। नौः। ग्लौवत्॥ ॥ इत्यजंताः स्त्रिलिङ्गाः॥ ॥ अतः।
 अमो। अदंतनेपुंसकी विद्यमान असेजे अंगल्या हूनपुठिलसु
 अमो। स अमो असा आदेश होय। शानं। एउ। रुस्वादिति संबु
 ढिलोपः। हे शाने। नपुंसकात्। च। क्ली। बी विद्यमान जे अंगल्या
 हूनपुठिल जौ ओउ। लोस शि होय। भ सं शा अस्ता कोण सूत्रपावे।
 येस्य। इति। च। ई कोर अण रवी तद्धित प्रत्यय पुटे अस्ता भ सं शक
 जे इवर्ण अवर्ण याचा लोप होय। इतिलोपे प्राप्ते। ओउ। संबंधी शी
 पुटे अस्ता प्रतिषेध लोप न होय। शाने। जः। रासोः। शिः। क्ली
 बी विद्यमान जे अंगल्या हूनपुठिल चे जे जस अण रवी रासुलोस

मध्य. को.

३७ जो
अंती

शि होय। शिः। सर्वनामस्थानं। शि असेजे ते सर्वनामस्थान संज्ञक
होय। नपुंसकस्य। मलचः। मलंत अथवा अजंत क्लीवी विद्यमान
असेजे अंगत्यासनुमागम होय। सर्वनामस्थान पुढे अस्ता। मित्
अचः। अंत्यात्। परः। अचो मध्ये अंत्य जो अचू लोह न पुढे त्याचा
च अवयवी भूत मित् असा आगम होय। उपधाया दीर्घः। शाना
नि। पुनस्तद्वत् शौचं रामवत्। एवं धन वन फलादयः। अदु। उ
तरादिभ्यः। पंचभ्यः। हेजे उतरादि कृपाचे राब्द क्लीवी विद्य
मान त्याहून पुढील वेजे सुअणखी अमूत्यां सुअदु उ आदे
शि होय। टः। डित् प्रत्यये पुढे अस्ता भ संज्ञक जे अंगत्याची
जीटिति चालोप होय। कतरत्। कतरद्। कतरे। कतराणि।

३७

हेकतरता पुनस्तद्वत् शेषं पुंवत् कतमत् इतरत् अन्यत् अ
 न्यतरत् अन्यतमशब्दाचेतर अन्यतमे असेचरूपजाणावे।
 एकतरशब्दाहून पुटिल सुअमल्यांस अदउन होया। एकतरं।
 ह्रस्वः। नपुंसके। प्रातिपदिकस्य। नपुंसकी विद्यमान जे अज
 ते प्रातिपदिक कल्या सहस्वता होया। श्रीपं। शानवत्। स्वमाः। न
 पुंसकात्। कीवी विद्यमान जे अंगल्याहून परसुअमल्याचालु जे
 कु होया। वारि। इकः। अचि। विभक्तौ। कीवी विद्युं० इत जे अंग
 त्यासनु मागम होया। अजादिविभक्तिपुटे अस्ता। वारिणी। वारीणि।
 नलुमतल्यस्य मासूचास अनिल्यत्व आहे लणून पक्षी संबुद्धिनि
 भित्तक गुण होया हेवारे। हेवारि। छेडि। तिया सूत्रे करून गुणपा

मध्य-को.

३८

विकल्पेक.

पावलाअस्ता। यदि औत्तअणखीत्तज्वद्भावगुणेभ्यः हेचारविधिपा
वलेअस्तायाहूनुपूर्वविप्रतिषेधेकसूनुनुमचुहोय। वारिणा। वा
रिणे। वारिणः। वारिणोः। नुमूअचिरत्तज्वद्भावभ्योनुद्। पूर्ववि
प्रतिषेधेन। वारिणा। वारिणि। हलादौचह्रिवत्। तृतीयादिषु।
भाषितपुंस्क। पुंवत्। गालवस्ये। प्रवृत्तिनिमित्तैक्यअस्ताज्जो
भाषितपुंस्कइंगंतक्लीबीविद्यमानअसेजेशब्दस्वरूपतेपुं
वत्तहोयौटादिकअजादिकविभक्तिपुटेअस्ता। अनादये।
अनादिने। इत्यादि। रोषंवोरिवत्। जेनिमित्तजेत्यातेउपादा
यधेऊनपुंलिंगीप्रवृत्तहोतोत्यासच निमित्तकसूनुन

३८

पुंसकी प्रवृत्त होतो तो उक्त पुंस्व स्रणावा पीलुर्दृष्टः। तत्फलं पीलु। त
 स्मै पीलुने। एथ पुं वरं भावनं साला। प्रवृत्ति निमित्ता चे एव्यना ही अ
 स्थिदधि सक्थ्ये ध्यां। अनउ०। उदात्तः। एषां यां शब्दां स अनउ० सोय
 तो उदात्त होय। यादिक अजादिक विभक्ति पुढे अस्ता। अलोपः। अनः।
 अंगाचा अवयवी भूत असर्वनाम स्थान यकारादिक अथवा अजा
 दिक असे जे स्वादिक ते आहेत परजास असा जो अन्त्याचा जो
 अकार त्याचा लोप होय। दध्ना। दध्ने। दध्नः। २। दध्नोः२। दध्नां। वि
 भाषा। डि० रयोः। अंगाचा अवयव असर्वनाम स्थान यजादि स्वादि
 परजा अन्त्याचा अकार त्याचा लोप विकल्पे करून होय। डि० अण
 स्वीति पुढे अस्ता। दध्नि। दधनि। शेषं वारिवतः। एवमस्थि सक्थ्य

मध्य-को-

३९

प्रद्योअरी-
३३ प्रत्याहा
र

क्षणादयः। सुधि। सुधिनी। सुधीनि। हे सुधे। हे सुधि। सुधिनेत्यादि।
मधु। मधुनी। मधुनि। हे मधो। हे मधु। एवं मध्यादयः। सुलु। सु
लुनी। सुलुनि। सुलुनेत्यादि। धातु। धातुणी। धातुणि। हे धा
तः। हे धातु। धातुणां। एवं धातुकर्त्तादयः। एचः। इकु। रुस्वा
देरी। आदेरा सपावले असेजे रुस्वते पावले अस्ता एचजेत्या
सङ्गसुप होतु। प्रद्योअरी स्थिति अस्ता। प्रद्यु। प्रद्युनी। प्रद्यु
नि। प्रद्युनेत्यादि। प्ररि। प्ररिणी। प्ररीणि। प्ररिणा। एकदेशी
विकृतत्वजेते अनन्यवत् जाणावे। प्रराभ्यां। प्ररीणां। सुनु।
सुनुनी। सुनुनि। सुनुना इत्यादि॥ ॥ इत्यजंतानपुंसकलिं गाः॥

३९

हः। टः। हकारसटकार होय। सल अथवा पदांत ~~सु~~ अस्ता। लिह। सु
 अशी स्थिति अस्ता। लिट्। लिङ। लिहो। लिहः। लिहा। लिङ्भ्यां। लि
 ट्सु। लिट्सु। दादेः। धातोः। घेः। उपदेशो चेठाई दादिके जो धात
 त्याचा जो हकार त्यास घकार होय सल अथवा पदांत अस्ता। एका
 चः। वेशः। भषा। सषंतस्य। स्थोः। धातूचा अवयवी भूत एका
 च सषंत असो जो वरा त्यास भष होय सेकार ध्वराब्दे पुढे अ
 स्तो पदांत अस्ता। एथे व्यपदेशी वङ्गावेकर न् धातूचा अवयव
 होय या स्तव भष भाव साला। धुक्। धुग्। दुहो। दुहः। धुग्भ्यां।
 धुधु। वा। दुह्। दुह्। दुह्। छिहा। एषां ह्यारीब्दांचा जो हकार त्या

मध्य.को.

४०

सधकारविकल्पकरुनसलपुढेअस्तापदांतअस्ता।धुक्।
धुग।धुट।धुडा।धुडभ्यां।धुगभ्यां।धुधु।धुट्सु।एवंमुह।
धात्वादेः।षः।सः।धातुचाआदिभूतजोषकार।यासस
कारहोया।स्नुक्।स्नुग।स्नुट्।स्नुडा।एवंछिह।इक्।यणः।
संप्रसारणं।यणाचाठाईप्रयुज्यमोनल-केलोजोडूकतौसं
प्रसारणसंस्कृतहोया।वाहः।उठ।मसंस्कृतजोवाहशब्द
त्याससंप्रसारणमूठहोया।संप्रसारणात्।च।संप्रसा
रणाहूनअत्रपुढेअस्तापूर्वपरस्थानीपूर्वरूपएकादेशहोया।

४०

एतेष्वस्य स्थितिर्विद्धिः विश्ववाह अणरवीशसूअशी स्थिति अस्ता।
 विश्वोहः। इत्यादि। चतुरनउहोः। आसू। उदात्तोः। चतुरशब्द अन
 उहशब्दस्य आमागमहोयतो उदात्तहोयसर्वनामस्थानपुठ
 अस्ता। सौ। अनउहः। अनउहशब्दासनुमागमहोयसुपुठअस्ता।
 आत्। शीनधोः। नुमू। यासूत्रापासून् आत्। याचा अधिकारक
 नूअवर्णहन्पुठनुमागमहोय। अतः याहेतुस्तव विशेषवि
 कित्तो नुमतेणे आसूजो तो न बाध्यते। आसूजो तेणे ही नुमजो
 तो न बाध्यते। सुलोपः। संयोगांतस्य लोपः। नुमविधिसाम
 ध्यात्। वसुसंस्थितिदत्वं न। संयोगांतलोपास असिद्धत्वआ

मध्यको.

उ ४१ हेयास्तवनकारा-चालोपनहोया अनडुन। अम। संबुद्धौ। चतुर्ज
नेहत्याशब्दास अमागम होय संबुद्धिपुढे अस्ता। हे अनडुन। अन
डुहो। अनडुहः। वसुसं सुध्वस्वनडुहो। दः। सां त जो वस्व त त्यास
संसादिके जे त्यां स हीद कार होय। पदं त अस्ता। अनडुङ्गा मित्या
दि। पदं ते किं। स्वस्तौ। ध्वस्तौ एथे पदं त ना ही। सहः। साउः। सः।
साडू पी जो सहशब्द त्याचा जो सकार त्यां स षकार होय। पदं
त अस्ता। तुराषाडू। तुराषाडू। तुरासाहो। तुरासाहः। तुराषा
ङ्गा मित्यादि। दिवः। औत्तरे। दिव असे जे प्रातिपदिक त्यास ओ
होय सुपुढे अस्ता। सुद्यौः। सुदिवौ। सुदिवः। दिवः। उत्तरे। पदं ते।

४१

सुद्युभ्यामित्यादि। चत्वारः। चतुरः। चतुर्भिः। चतुर्भ्यः। षट्चतु
र्भ्यः। च। षट्संज्ञके चेतुरशब्दया हनपरजो आसत्यासने उगम
महोय। रषोभ्या। नः। णः। समानपदे। रेफ षकारा हनपरजो नका
रत्यासणकार होय समानपदे स्र-एकपदा चेठाई अस्ता। चतुर्णां।
रोः। सुपि। रसंबंधी जो रेफ त्यास च विसर्ग होय सुपु पुट अस्ता।
चतुर्षु। मः। नः। धातोः। मां तजो धातु त्यासन कार होय पदं
त अस्ता। प्रशान्। किमः। कः। किमशब्दा सक आदेश होय।
विभक्तिपुट अस्ता। कः। को। के। इत्यादि। सर्ववत्। इदमः। मः। इद
मशब्दा समकार होय सुपुट अस्ता। ल्यदाद्यत्वापवादः। इदः। अय
पुंसि। इदंशब्दा च जो इदं भाग त्यास अयू होय। पुंसि पुंलिङ्गा चेठाई।

मध्य-को.

४२

२२
वास्तवसमपवत

सुपुटे अस्ता। अयम्। त्यदा हीना मः या सूत्राने अकार शाला अस्ता
अतः। गुण। अपहंती विद्यमान जो ह्रस्व अकार त्यास गुण पुटे अ
स्ता पूर्व परस्था नी पर रूप होय। दः। च। इदमशब्दा चो जो दकार
त्यास मकार होय। विभक्ति पुटे अस्ता। इमो। इमे। त्यदा दिक् जे
को स संबोधन नी ही उत्सर्गः स्म। सामान्यतः। अन्। आपि।
अकः। अककार क। ककार रहित असा जो इदमशब्दा
चो जो इदु भाग त्यास अनू होय। आपि विभक्ति पुटे अस्ता।
आपू असा प्रत्यहार जाणावा। अनेन। ह्रस्व। लोपः। ककार
हित असा जो इदमशब्दा चो इदु भाग त्याचो लोप होय। आपू
पहला दिक् विभक्ति पुटे अस्ता। ना। अनर्थको। अनभ्यासवि
अलौक्य विधिः।

४२

विकारे। अर्थ रहित जो अभ्यास विकार ल-अभ्यास विकार ना ही माचे
ठाई अलौल्य विधि जो तो ना ही होत। ओघंत वेत। एकस्मिन्। एका
चे ठाई केले जे कार्य ते आदिचे परी अणखी अंतोचे परी होय। सुपि
चेति दीर्घः। आभ्या। न। इदमदसोः। अकोः। ककार रहित असे
जे इदम् अणि अदस्य हनू पुढिलचा जो भिस्त्यास ऐसन हो
या एभिः। अस्मै। एभ्यः। २। अस्मात्। अस्या अनयोः। एणां। अस्मि
न्। एषु। द्वितीयादौ स्तु। एनः। इदम् अणि एतदशब्दयोस्त एन असा
आदेश होय द्वितीयासंपूर्ण विभक्ति अणखी टा अणखी ओस्ते पुढे
अस्ता। अन्यो देश अस्ती काही एक कार्य कराया कारणे उपात्तम्
बोलावला जो त्यास कार्य तरल-अन्य कार्य कराया कारणे जे

मध्य-को.

४३

पुनरुपादानस्य फिस्तनवोलावणे त्याचेनाम अन्वादेशा यथाना
मजसे अतेन पुरुषेण व्याकरणं व्याकरणजे ते अधीतं पठला एनं
याते सुदवेदजो तो अध्यापय पंढीवा अनयोः स्यात् पवित्रं कुलं
कुलजे ते पवित्र आह। एनयोः नाम यांचे स्वनाम धनं धनजे ते प्र
भूतं नाम विपुलं अस्ति आह। एनं। एनौ। एनात्। एनेना। एनयोः।
एनयोः। राज्ञा। ना। डि. संबुद्ध्याः। न कारोचालोपन होय डि. अण
शी संबुद्धि पुढे अस्ता हे राजन् उत्तरपद आह पुढे जास अस्ता डि.
पुढे अस्ता प्रतिषेध बोलावा ब्रह्मणि निष्ठा यस्य सः अस्ति निष्ठः।
राज्ञानौ। राज्ञानः। राज्ञानं। राज्ञानो। राज्ञेः। राज्ञा। ना। लोपः। सु
पुस्वरसंज्ञा तु विधिषु कति। सुपासमानून कार्यं कर्तव्य अस्ती ४३

स्वरविधी अस्ता संज्ञा विधी अस्ता कृत प्रत्यय पुढे अस्ता जो तु विधि
 तो कर्तव्य अस्ता नलो पजो तो असिद्ध जोणा वा। अन्यत्र सिद्धः। कुत्र।
 कोठे। राजा श्व इत्यादी। इति हेतोः असिद्धत्वात् आत्वे एत्वे ऐस्त्वे च
 न न होय। राजभ्यां। राजभिः। राजभ्यः। राज्ञि। राजनि। यज्वा।
 यज्वानौ। यज्वानः। यज्वानां। न। संयोगात्। वसंतात्। वकारात्
 मकारात् जो संयोगात् याह न परं जो अना चो अकारात् या चालोप
 न होय। यज्वनः। यज्वभ्यां। ब्रह्मणः। ब्रह्मभ्यां। ब्रह्मणा। इन्द्रो
 नृपुणार्थ मणं। सौ। एषां शब्दानां हे शब्द जे यां स रि पुढे अस्ता
 च उपेधे स क्षिर्ध होय। सौ। च। इन्द्रोदिकू जे शब्द या ची जी उप
 धातीला दीर्घता होय अ सं बुद्धि सु पुढे अस्ता। वृत्रहा। हे वृत्र

मध्य-को.

४४

तीहिमधि
लेखका.

हन्। एका-चोत्तरपदे। णः। एकआहेअचूजांमध्येतों एकाचूएकाच
आहेउत्तरपदजासमासाचेंतो एकाजुत्तरपदसमास एकाजुत्तरपद
समासजोल्याचेंठाईजेंपूर्वपदलोपूर्वपादाचेंठाईराहिलेंजेंनिमित्त रेफबका
त्याहूनपुढिलेप्रातिपदिकांतेंनुसंबंधीअथवाविभक्तिस्थजो
नकारल्यासणकारहोय। वचहणो। वचहणः। हः। हंतेः। ज्ञान्ते
पु। जित् अथवाणित् प्रत्ययपुढेअस्तोअथवानेकारपुढेअ
स्ताहूनधातूचाजोहकारल्यासकुलहोय। हंतेः। उपसर्गाचेंठा
ईराहिलेंजेंनिमित्तत्याहूनपुढिलेहन्धातूचाजोनकारल्यास
णकारहोय। णहण्यातुअपूर्वस्य। हन्धातूचानकारासज

४४

रणत्वहोयतरअत्पूर्वकजोहन्धातुनकारत्यासचणत्वहोय
 नान्यस्याप्रच्युति। योगविभागाचासोमर्थीस्तुवैअनेतरस्थवि
 धिर्वाप्रतिषेधोवाविधिस्तदेणेप्रतिषेधल-नदेणेहिदोहीकार्ये
 जीतीअनेतरस्त-समीपवती। त्यासचहोतोअसाजोन्याय
 त्यातेबाधित्वास्त-आधुनकुमतिचइत्यादिभूजीणत्वशा
 त्यास्त्रजेतेनिवर्ततेनाहीहोतु। वृत्रघ्नइत्यादि। एवंशाडि-नृण
 रास्त्रिअर्थमन्। पूषन्हीरूपेअशीचजाणावी। मघना। बहुल।
 मघवन्। वासनाविकल्पेकरूनतअसाअंतादेशहोय। त
 यामध्येजोर्ततोइसंज्ञकजाणावा। उगिदचा। सर्वनामस्थाने।
 कार

मध्य-को.

४५

अथातोः। अथातु जें उगित शब्द स्वरूप न लोपि जे अंच तिल्या स नु
मागम होय। सर्व नाम स्थान पुटे अस्ता। मघवान्। उपधे स दीर्घता
कर्तव्य अस्ता संयोगा तलोप जो त्या स अ सिद्धत्वं ना ही। बहल ग्रह
ण केलें आ हे या स्ति वा। मघवंतं। मघवंतो। मघवतः। मघवन्मो।
त अस्मा आदेश न शाला त्या पक्षी सुटि सुट प्रत्याहार पुटे अ
स्ता राजन शब्दा सो रिखे। श्वयुव मघो नां। अतद्धिते। अनू
आहे अंती जाचे तो अन्नं ते न संज्ञक असे जे हे शब्द तद्धिते
मिने प्रत्यय पुटे अस्ता संप्रसारण होय। मघो नः। मघो ना।
मघवभ्यामित्यादि। एवं श्वनू युवनू। ना। संप्रसारणे। स

४५

प्रसारणं। संप्रसारणपुटे अस्ता संप्रसारण न होय। यूनः। यूनः।
 युवभ्यामित्यादि। अर्वा। हे अर्वन। अर्वणः। त। असो। अर्वाः। निम्न
 रहित जे अर्वन शब्द त्यासत असो अंत देश होय। सुपुटे नस्ता अ
 र्वतो। अर्वतो। अर्वतः। अर्वतः। अर्वता। अर्वत्या मित्यादि। पथि
 मथ्य भुक्षा। आतः। हे जे शब्द यास आकारों ता देश होय। सुपुटे
 अस्ता इतः। अतो। सर्वनामस्थाने। पथ्यादेरि कारस्य अकार
 स्यात्। पथ्यादि कुं जे याचा जोड कार त्यास अकार होय। थः।
 अनथः। पथि मथि शब्दाचा जो थकार त्यास अनथ अ
 सा आदेश होय सर्वनामस्थान पुटे अस्ता। पंथाः। पंथानो। स
 स्यादेः। लोपः। भसं सं जो पथ्यादि कुं त्याची जी टी तीचा लोप हो

मध्य-कौ.

४६

प्र। पथः। पथिभ्यो। पथिभ्यः। रा एवं संधाः। नमुक्षाः। छांता। व
ट। वकारांत नकारांत जी संख्या तीषट्सं संकु होय। पंच। पं
चो पंचभिः। पंचभ्यः। षट् चतुर्भ्यश्चेति नुट। नः। उपधायाः।
नांता वीजी उपधाती सदीर्घता होय नां संपुट अस्ता। पंचा
नां। पंचसु। अष्ट नुः। आ। विभक्ति। अष्ट नु शब्दा स आका
र होय विभक्ति पुट अस्ता। हलादिक विभक्ति पुट अस्ता वि
कल्पे करन आकार होय। अष्टाभ्यः। ओरा। कृत ल-के ली
आहे आकार जो तो जो स असा जो अष्ट नु शब्द त्याह नु पर
जे जसूरा सूत्यां स ओरी होय। अष्टभ्यः असे साटू ले अस्ता

४६

कृत्स्न-केला आ हे आ त्वनिर्देशा जो तो ज सूर स्याचा विषय अ
 स्ता। आ त्वजे ते जाणविते। अष्टौ। अष्टाभिः। अष्टाभ्यः। अष्टा
 न्ता। अष्टासु। आ त्वजा पक्षी न सा ले सा पक्षी अष्टन शब्द जो तो पं
 चन शब्दा प्र-जाणावा। **अ** त्वि गृध्र क स्त्रि ग्नि गुच्छि गं तु पु जि
 कुम्भं चा। **च**। एभ्यः या शब्दा हन कि न प्रत्यय होय। सुबंत उप
 पद अस्ता अंच धातू हन कि न होय। पुजि कुम्भं च या हन सुबंत
 उपपदन स्ता ही होय। कि न होय। कुम्भं च धातू सं न लोपाभाव
 जो तो ही निपात्य ते साधिजेता। कि न प्रत्यया चेजे क कारने का
 र ते इ सं श कृ जाणावे। **कृ** दू। अतिङ्। अत्र या धात्वो। पिकारा

मध्य. को.

४९

चाठाई तिउ. भिन्नजो प्रत्यय तो कृत संशक होया वेः। अष्टकस्य।
अष्टक संशक जीविति चालोप होया। किं न प्रत्ययस्य। कुः। किं
न प्रत्यय जाह नू करिजे तो त्यास कवर्ग अंता देश होया। पदांत अ
स्ता। इति हेतुः अस्य या से अ सिद्धत्वं आह लणूने चो कुः या
सूत्रे कर्तृ कुत्व होया। ऋत्विक। ऋत्विक। ऋत्विक। ऋत्विक।
भ्यामित्यादि। युजेः। असमासे। युजधातुस नुमागम होय स
मास न स्ता सर्वनामस्थान पुठे अस्ता। हलच्चाभ्य इति सुलोपः।
संयोगो तस्य लोपः। कुत्वे कर्तृ न नकारा सुड. कार होया। युड.।
युञ्जो। युञ्जः। युग्भ्यां। अचोः। कुः। चवर्गस्य कवर्गस्या त्रौ ४७

एनं। एतौ। एनौ। एतान्। एनान्। एतेन। एनेन। एतयोः। एनयोः। २।
 ३। प्रथमयोः। अस्। युष्मत् शब्द अण रवी अस्मत् शब्द या ह न पु
 ढिल चतुर्थी चैक वचन उ- त्या स प्रथमा अणि द्वितीया त्या स ही
 अमादेश होया त्या हो। सो। युष्मद् अस्मत् शब्दाची जी म पर्यंत भा
 ग त्या सत्व अणि अह असे आदेश होत। सुपुढ अस्ता। अतो गु
 णेति पररूपं। शोषो लोप आत्व यत्वाची निमित्त क न सेल अ
 री विभक्ति पुढ अस्ता युष्मद् अस्मत् शब्दाची जी द्वितीया लोप
 होय। त्वं। अहं। युवावौ। द्विवचने। दोहो व्यक्तीचे सा घणार अस
 जे युष्मद् अस्मत् शब्द त्यांची जी म पर्यंत भाग त्या स युव अणि आवह
 होत। द्विवचन विभक्ति पुढ अस्ता। प्रथमायाः। च। द्विवचने। भाषायां।
 अथवा अं त्याचा लोप होया

मध्य-को.

४९

औं ड. पुढे अस्ता युष्मदस्मत् शब्दां स आत्वं होय लोके शास्त्राचे ठाई।
युवां आवां। युष्मदस्मत् शब्दाचा जो मपर्यंत भाग
त्यास युष्मदस्मत् हे आदेश होत। नसु पुढे अस्ता। युष्मदस्मत्। ए
क वचने। एका व्यक्तीचे सांगणारा जे युष्मदस्मत् शब्दाचा जो म
पर्यंत भाग त्यास त्वे अणि म हे आदेश होत। विभक्ति पुढे अस्ता। द्वि
तीयायां। चा अनयोः यां स आत्वं होय द्वितीया विभक्ति पुढे अस्ता।
त्वां। मां। युवां। आवां। शसः। न। आभ्यां याहून पुढे चा जो शसू
त्यास नकार होय। अमाचा अपवाद क। ओदेः परस्य या सूत्रे क
सूत्रास संबंधी जो अकार त्यास नकार होय। संयोगांत स्पेति सलो
पः। युष्मो न। अस्मान्। यः। अचि। अनयोः यां सयकार आदेश

४९

होय अनादेशासु. आदेशासु हित अजादिकु विभक्ति पुढे अस्ता. त्वया।
 मया। युष्मदस्मदीः। अनादेशा. अनयोः। स्त. यां स आकार होया आ
 देशासु हित हलादिकु विभक्ति पुढे अस्ता। युवाभ्यां। आवाभ्यां। युष्मा
 मिः। अस्माभिः। तुभ्यमहौ। दु. या। अनयोः। स्त. युष्म. यांचा जो म
 पर्यंत भाग त्यास तुभ्यमहौ हे आदेशा होत चतुर्थी चीडे. पुढे अस्ता।
 शेषेति टिलोपः। तुभ्यं। मद्यं। भ्यसः। अभ्यसु। आभ्यां स्त. युष्म. या
 हनू पुढील जो भ्यसु त्यास अभ्यासु आदेशा होया। युष्माभ्यां। अस्मभ्यां।
 एकवचनस्य। च। आभ्यां स्त. युष्म. या हनू पुढील जो ड. सिपंचमीचेर
 कवचन जे त्यास अत्र होया। अनेकालात सर्वादेशाः। त्वत्। मत्। पंचम्या
 अत्। आभ्यां स्त. युष्म. या हनू पुढील जो भ्यसु त्यास अत्र होया। युष्मात्।

मध्य-को.

शेषेतिदिलोपः॥

५०

अस्मत्तवममोडसि। अनयोः स्मृषु० याचाजोमपर्यंतभाग
त्वासतवममहेआदेशोहोतउ० सुपुटेअस्ता। युष्मादस्मभ्यो॥ उ० सः॥
अश। आभ्यो युष्म० याहनपुटिलजोड० सुयोसअरुहोय। शिवा
तसर्वोदेशः। तवामम। युवयोः। आवयोः। साम०। आकं। आभ्यो
याहनपुटिलजासामत्यासआकंअसाआदेशोहोय। भाविनः सु
२ः स्मृ०। होणारजोसुदुल्याचा निवृत्त्यर्थं स्मृ०। तोनहोउत्तरस्मृ-सूत्रा
चाठई सुडागमसहितउच्चारकेले। अंत्यलोपपुष्टेभाविनः सु
टो निवृत्त्यर्थं ससुदुके निर्देशः। युष्माकं। अस्माकं। त्वयि। मयि।
युष्मासु। अस्मासु। युष्मादस्मदोः। षष्ठी। चतुर्थी द्वितीयास्थयोः।
वांन्ना नो। पदाहनपुटिल पादसु० चरणयाचे आदिसनाहीराहिले

५०

षष्ठीचतुर्थीद्वितीयायाविभक्तीचाहा ईराहिले त्यां सवां अणखी नौ हे
 आदेश होत। बहुवचनस्य। वसू नसौ। उक्तविधयोः स-पदात्परयोः०
 स्थितयोः षष्ठादिबहुवचनांतजेयुष्म-त्यास वसू नसू असे आदेश होत
 तेमयो। एकवचनस्य। उक्तविधिजेह षष्ठीचतुर्थीयांचेजे एकवचनत
 दंतजेहे त्यां सतेमेहे आदेश होत। त्वामौ। द्वितीयायाः। उक्तविधिदि
 तीयेकवचनांतजेहे त्यां स त्वामाहे आदेश होत। श्रीशः। त्वां मां अव
 तु। रक्षूत। सः हरिः तेमेपि स-तुभ्यं मह्यं शर्मस-सुखजे त्याते दहात
 देकुत। सः हरिः तेमेपि स-तवममस्वामी रक्षिता। विभुः व्यापकजो तो
 वां नौ स-युवां आवां पातु रक्षूत। ईशः ईशजो तो वां नौ स-युवाभ्यां आ
 वाभ्यां तुलाकारणे आ-णे सुखंदेहा तुदेकुत। हरिः हरिजो तो वां नौ युवयोः

मध्य-को-

५९

आदेश

आवयोः आमचापतिः रक्षिता। सः परमेश्वरजो तो वः नः युष्मान्
अस्मान् अव्यात् रक्षूत्। सः तो जो तो वः नः युष्माभ्यं अस्मभ्यं शिवं कल्या
णजेत्याते दद्यात् देउत्। अत्र संसारे सः तो जो तो वः नः युष्माकं अस्माकं
आलाससेव्यः सेवाकरायासमोप्य। एकवाक्य अस्ता युष्मादादेशजेते
बोलावे दोन वाक्ये अस्तान होया। एकं आहेति उ. स. क्रियापद स. लकार
उपाचैठाई ज्यावर्ण समुदायाचा ठाई त्यास वाक्ये असे सणावाते न त्या
कारणास्तब इह एथे न साला। ओदने पचात व भविष्यति। ऐथे वाक्ये
दोन आहेत स. आदेश न साला। एते हे वांन्ता नादि कुजे आदेशजेते
अन्वादेश न स्ता विकल्पे करून बोलावे। अन्वादेश अस्तातर नित्य
होता धाताते भक्तोस्ति। तव भक्तौस्तीति वा। तस्मै तेन नम इत्येव।

५९

चकारआहेअदिस्यांसअसेजेपाच

नाचवाहाहेवयुक्ते। चादिपंचकारीयोगअस्ता एतेहेआदेशजेतेन
होत्र। हरिः त्वां मां चरक्षतु। कथं त्वां मां वानरक्षेदित्यादि। पश्यार्थः।
वा। अं नो लोचने। चाक्षुष शानार्थं न सतील असेजेधातु त्या हीरी
योगअस्ताहेआदेशजेतेन होत्र। चेतसानाम अंतःकरणेन समीक्ष त्वां
तेपाहातो। आलोचनाचेठाईतरभक्तजोतोत्यातूतेचेक्षूकरूप
रूपतिपाहातो। सपूर्वायाः। प्रथमायाः। विभाषा। विद्यमानपूर्व
कजेप्रथमातपदत्याह नपुटि कृचेजेयुष्मदस्मत् शब्द त्या सअन्वा
देशअस्ताहीआदेशजेतेविकल्पेकरून होत्र। तेन कारणेन त्या
कारणास्तवतूहीमीहीभक्तजेतेआहो। सहृदिः त्वां मां त्रायते रक्षि
तो। त्यामाअसेहीहोईल। सा। आमे त्रितं। संबोधनाचेठाईजी

प्रथमा तदंत जे शब्द स्वरूप तें आमंत्रित संस्कृत होय। पूर्विल्ल
जे आमंत्रित ते अविद्यमाने। ओ हे चूना ही। अग्रे त वे दे वे अस्मा
नूपाहि। ना। आमंत्रिते। समानाधिकरणे। सामान्यवचने।
विशेष्ये जें ते समानाधिकरणे। समानार्थक असे विशेष
णपुढे अस्ता अविद्यमान वस्तु भाव न होय। हरेदया लोचनः पा
हि। सुपात्र। सुपादो। पादः। पत्र। पादश्च। त जे अंग ते भ
संज्ञके त्याचा अवयवी भूतो पाद शब्द त्यास पत्र असा
आदेश होय। सुपदः। सुपादामित्यादि। अग्निमंत्र।
अग्निमथो। अग्निमद्वो इत्यादि। अनिदितो। हलः उप

लोप

धायाः। कृति। हलन्तानां प्र-हलन्त अनिदित् अशीजीं अंगं त्याची
जीउपधाती-चा जो नकार त्याचा होय। कित् डित् प्रत्यय षे पुढे अ
स्ता। उगिद-चामिति नुम्। संयोगांत स्य लोपः। नेकारास कुत्वे
कंरुन्ड-कार होय। प्राउ। प्राओ। प्राअः। अचः। लुप्तनकार
के जो अंचेति त्याचा जो भे संशक अकार त्याचा लोप होय। चो।
लुप्त आह अकार नकार जाचा असा जो अंचेति तो पुढे अस्ता पू
र्विल-चा जो अणु त्यास दीर्घता होय। प्राचः। प्राचा। प्रागभ्यामि
त्यादि। प्रत्यंउ। प्रत्यओ। प्रतीचः। प्रतीचा। प्रत्यगभ्यां इत्यादि।
उदङ्। उदओ। उदः। इत्। उत्तराब्दाहून् पुढील लुप्त आह न

मध्य-को.

५३

स.

कारजाचा असा जो अंचतित्याचा जो भसंज्ञक अकार त्यास ईत हो
या उदीचः। उदीचा। उदग्रभ्यां इत्यादि। समः। समिः। वप्रत्ययां त
अंचतिपुढे अस्ता समीब्दास समिअसा आदेश होय। सम्यउः।
सम्यञ्चौ। समीचः। समीचा। सम्यग्रभ्यां इत्यादि। सहस्य। सध्रिः।
तादृशीं तेसा वप्रत्ययां त अंचतिपुढे अस्ता सहशब्दास सध्रिअसा
आदेश होय। सध्र्यउः। सध्र्यञ्चौ। सध्रीचः। सध्रीचा। सध्र्यग्रभ्यां।
तिरसः। तिरि। अलोपे। अलुप्त आह अकार जाचा असा वप्रत्य
यां त अंचतिपुढे अस्ता तिरः शब्दास तिरि आदेश होय। तिर्य
उः। तिर्यञ्चौ। तिर्यश्चः। तिर्यश्चा। तिर्यग्रभ्यां इत्यादि। ना अंचेः। पू
जायां। पूजार्थकृजो अंचतित्याचा उपधाभूत जो नकार त्याचा लो

५३

पन हो या प्राडः। प्राञ्चौ। नकाराचालोपनसालायास्तव अलोपेन।
 प्राञ्चैः। प्राङ्गौ। प्राडः। एवया प्रकारेकरनृणां पूजार्हप अर्थी प्र
 त्यङ्-ङादिकृत्पेजाणां वी। कुङ्-। कुञ्चौ। कुञ्चनः। कुञ्च्यौ। कुङ्ग्यौ।
 पयोमुक्। पयोमुचौ। पयोमुचः। पयोमुचा। पयोमुग्भ्या इत्यादि।
 महः। पूजायां। महधातूनां तो पूजार्थवर्ततो। वर्तमाने। एवमह
 दृहज्जगद्धत्वत्वात्। वा एते हेतव्येते वर्तमानार्थी निपातजेता
 हेतुयांसराचवत्कार्यहोय। उगित्वास्तव नुम। सात महतः।
 संयोगस्य। सातजो संयोगत्याची जी उपधा महतराब्दाचा जो न
 कारत्याची जी उपधा तीस दीर्घता होया। असंबुद्धि सर्वनामस्थान
 पुढे अस्ता। महान्। महंतो। महंतः। महतः। महता। महद्वा मित्या

मध्य-को.

५४

दि। अत्वसंतस्य। च अ धातोः। अतु प्रत्ययांतु जें राब्द स्वरूप
ल्याची जी उपधा ती सदीर्घता होय धातु भिन्न जें असंत त्याचे ही
उपधे सदीर्घता होय असंबुद्धि सुपुढे अस्ता। धीमान्। धीमंतौ।
धीमंतः। हे धीमान्। रासादो महद्देव। भातेः। डवतुः। डिलसा
मथ्यास्तव भसंशोरहित जो त्याची जी टि ती चाही लोप होय।
भवान्। भवंतौ। भवंतः। रात्रु प्रत्ययांतु जें राब्द स्वरूप त्याचे
तर भवन् असे रूप जाणावे। उभे। अभ्यस्त। षष्ठाध्यामस्थ
जें द्वित प्रकरण त्याचे ठाई जे दोन विहित ती दोही समुदित
ल. मेका लीं अशी जी राब्द स्वरूपे तीं अभ्यस्त संज्ञे कहोत।

५४

न। अभ्यस्तात्। छतुः। अभ्यस्ता हनृपुठिल शतृ प्रत्ययाचा जो
 अवयव तदेतजें शब्दस्वरूप त्यास नुमागमन होय। ददत्ताद
 दत्तौ। जक्षित्यादयः। षट्। षट्धातवः साधातु अन्यस्म-दुसरे
 अणरवीजक्षिश्चल-जक्षिधातु एतेहसातजेते अभ्यस्तसंज्ञक
 होत। जक्षि। जाग्रादरिद्रा। शास्रादीधीड-वेवीड-चकासातथा।
 मुनिभाषिताः एतेधातवः ते अभ्यस्तसंज्ञकाः ज्ञेयाः। जक्षत्।
 जक्षतौ। जक्षतः। एवं जाग्रत्। दरिद्रत्। शासत्। चकासत्।
 न दीधीड-दीप्तिदेवयोः। वेवीड-वेतिनातुल्ये। एतौघांदसौ। गुप्।
 गुप्। गुपः। गुब्भ्यां इत्यादौ ल्यदादिषु। दृशः। अनालोचनौ।
 कञ्च। ल्यदादिकु उपपद अस्ता अशानार्थकू जो दृशधातुसा

मध्य-को.

५५

हन्कभूहोयचकाशस्तकिनहीहोयआ। सर्वनाम्नः। सर्वना
मेशब्दासेआकारोतादेशहोय। दृक् दृशअणखीवतुहेपुठअस्ता।
कुलासअसिद्धत्वास्तव्रश्चेति यासूत्रेकरुन्प्रकारं तस्यषकार
स्यजशत्वेनडः। तस्यकुत्वेनगः। तादृक्। तादृशो। तादृशः। तादृग्
भ्यां। व्रश्चेतिषः। जस्त्वचेल्वी। विट्। विडो। विशो। विशः। विड्भ्यां। न
शोः। वा। नशशब्दासकवर्गोतादेशविकल्पेकरुन्होयापदंत
अस्ता। नक्। नग। नट्। नड। नशो। नशः। नगभ्यां। नट्भ्यां। स्पृ
शः। अनुदेको। किन्। उदकेभिन्नसुबंतउपपदअस्तोस्पृश
शब्दाहन्किनहोय। घृतस्पृक्। घृतस्पृशो। घृतस्पृशः। दधक्।
दधवो। दधवः। दधगभ्यां। रलमुट्। रलमुषो। रलमुषः। रल

५५

मध्य-को.

स

प६

विद्वान्। विद्वंसो। विद्वंसः। हे विद्वन्। वसोः। संप्रसारणं। वसुप्र
त्ययान्तं भसंस्कृतं असेजे अंगं स्यात् संप्रसारणं होय। विदुषः। वसुस्त्रिंस्त्रि
विदुषः। विद्वद्भ्यो इत्यादि। पुंसः। असुडः। पुंसं शब्दासु असुडः होय
सर्वनामस्थानं पुठे अस्ता। पुमान्। पुमानसौ। पुमांसः। हे पुमन्। पुं
पुंसासः। पुंभ्यां। पुंसु। ऊदुशनेति यासूत्रे कर्तुन् अनंडः होय। उशना
उशनसौ। उशनसः शब्दासु अनंडः विकल्पे कर्तुन् होय संबुद्धिपु
ठे अस्ता। नलोपजोतो विकल्पे कर्तुन् बोलावा। हे उशन। हे उश
नन्। हे उशनः। उशनोभ्यामित्यादि। अनेहा। अनेहसौ। अनेहसः।
हे अनेहः। वेधाः। वेधसौ। वेधसः। वेधोभ्यां इत्यादि। अदसः। ओ।

प६

सुलोपः। च। अदसूराब्दासू औ होय अणखी सुचा लोप होय सुपुटे अस्ता।
 त। रितिया लूत्रे ककुन सकार सा ला। असी। औ लोचा प्रतिषेध जो तो
 सा कच कस्य सणजे अकच सहित जो अदः शब्द सचिकल्पे कर
 न दोला ना सकारा हुन पुटे उत्तरी होय। असकौ। असुकै। सदाघ
 लोपर रूप लो। वृद्धिः। अदसः। असेः। दात। उ। दः। मः। असांत जो
 अदः शब्द लोचा जो दकार त्या हुन पुटे उत्त अणखी उत्तरी होत द
 कारा समकार होय। आंतरतम्या स्तव दूस्वा से उ होय दीर्घा स कुका कार
 रहोय। अमू। एतः। ई। वहुवचने। अदः शब्द लोचा जो दकार त्या
 हुन पुटिल लोचा जो एकार त्या सई होय। दकारा समकार होय। वहुव
 आंतरतम्य ल. सदरात म कार

असः शी

मध्य-सो.

५७

चनाचीउक्तिअस्ताअमी।पूर्वत्रासिद्धंयासूत्रेकरुनविभक्तिकार्यजेते
प्राकनामपूर्वीकरावेपश्चात्तत्तदनंतरउत्तमत्वहेकरावे।अमुं।अमू।
अमून्।मुत्तेकतेमुत्तकेलेअस्ताधिसंज्ञाअस्तानाआडेनास्त्रियांया
सूत्रेकरुननाभावमनाहोय।तमुने।नाभावेकर्तव्येनाकर्तव्यअ
स्तामुभावेजोतोअसिद्धनहे।अमुना।अमूभ्यां।अमीभिः।अमु
ष्यै।अमीभ्यः।अमुष्मात्।अमुष्य।अमुयोः।अमीषां।अमुष्मिन्।
अमुयोः।अमीषु॥ ॥इतिहलन्ताःपुंलिंगाः॥ ॥नहः।धः।न
ह्राब्दाचाजोहकारस्यासधकारहोयसलपुठेअस्तापदांतअस्ता।
अहिरतिरुचिर्व्यधिरुचिसहितनिषु।कौ।किंबेतहेपुठेअस्तापूर्विलचा

भावः

५७

जो अणु त्यास दीर्घता होय। उपा नत। उपा नहौ। उपा नहः। उपा नङ्ग। उ
पा नलु। किं न प्रत्यये त आह लण न कुले न हस्य घः। उच्छि कू। उच्छि हौ। उच्छि
हः। उच्छि ग्भ्यां। शौः। दिवौ। दिवः। द्युभ्यो इत्यादि। गीः। गिरौ। गिरः। एवं पूः।
पूः। पुरौ। पुरः। चतस्त्रिः। चतस्त्रिभिः। चतस्त्रिभ्यः। चतस्त्रिणां। चत
स्त्रिषु। किमः। किमृशब्दासकादेशशाला अस्ता टा पू स्या ला। को। को।
काः। सर्वा वत्तः। यः। सो। इदमृशब्दाचा जो दकार त्यास यकार होय
सुपुटे अस्ता। इदमः। मः। इदमृशब्दाचा जो मकार त्यास मकार च
होय। सुपुटे अस्ता। इयं। यदाद्येत्वं पररूपत्वं। टा पू। दश्चेति मः। इमे।
इमाः। इमां। इमे। इमाः। उरन्। आपि। अकः। अनया। हलि लोपः

मध्यको.

५८

आभ्यां। आभिः। अस्यै। अस्याः। २। अनयोः। आसां। अस्यां। आसु।
स्रक्। स्रजौ। स्रजः। स्रग्भ्यां। अलदाद्यत्वं पररूपत्वं टाप्। स्या। त्ये।
त्याः। एवं। तद्। यद्। एतद्। वीक्। वाचौ। वाचः। वाग्भ्यां। ३। अपृश
ब्दो नित्यं बहुवचनोत्तः। अपृते निति दीर्घः। आपः। अपः। अपः।
भि। अपशब्दासतकारहोयभादिकप्रत्ययपुटे अस्ता। अङ्गिः।
अङ्ग्यः। अपां। अप्सु। दिक्। दिशौ। दिशः। दिग्भ्यां। लदादिष्वि
ति दृशेः कित् विधौ नादन्यत्रापि कत्वं। दृक्। दृशौ। दृशः। दृ
ग्भ्यां। विट्। विडु। विषौ। विषः। विडुभ्यां। ससजुषोरिति सूत्रं।
सजूः। सजुषौ। सजुषः। सजूभ्यां। सजूः। शु। शसिवसीति षत्वस्य

५८

असिद्धत्वात्सत्त्वां आशीः अशिष्यो आशिषः आशीर्भ्यो असौ।
 उत्त्वमत्वा अमू अमूः अमुया अमूभ्यो अमूभिः अमुष्ये अमू
 भ्यः अमुष्याः अमुष्योः अमूषां अमुष्यां अमूषु ॥ इति हलन्ता
 स्त्रिलिङ्गाः ॥ ॥ स्वमोर्नपुंसकादितिलुक् वसुस्त्रिस्वितिदत्त्वां स्व
 नदुत्वा स्वनदुही चतुरनदुहोरित्याम् स्वनदुहि पुनस्तद्धत्वा रोषं पुं
 वत्वा वाः वासी वारि वोर वाभ्यां चत्वारि रोषं पुंवत् किं कौ को
 नि इदं इमे इमानि अन्वादेशां अस्तानपुंसकाच्चेठाई एनत् असा
 आदेशबोलावा एनत् एने एनानि एनयोः अस्त्रा संबुद्धिपुटे
 अस्तानपुंसकजेशब्दत्वाच्चाजोनकारत्वाच्चालोपविकल्पे कस्

मध्य-को.

49

नृबोलावा॥ हे अल॥ हे ब्रह्म नरा ब्रह्मणी॥ ब्रह्माणि॥ रः॥ असुपि॥ अ
हनृशब्दासरेपादे श हो ये सुप पुढे न स्ता॥ अहः॥ विभाषा डि र्योः॥
अन्ती॥ अहनी॥ अहानि॥ अहनृ॥ अहनृशब्दासरे हो य प दांत अस्ता॥
अहोभ्यां॥ श दंडि॥ दंडिनी॥ दंडीनि॥ सुपथि॥ टिलौपः॥ सुपथी॥
सुपथानि॥ दुर्क॥ दुर्गी॥ दुर्गि॥ नरजानां संयोगः॥ त्यदात्ये॥ त्या
नि॥ तद॥ ते॥ तानि॥ यत्र॥ यो॥ यानि॥ एतद्॥ एते॥ एतानि॥ गेवाक्॥ अच
त्यलोक गोची॥ गेवाञ्चि॥ पुनस्तद्धत्वा गोचा॥ गवोग्भ्यां॥ श॥ शकुत्र॥ शकु
ती॥ शकुंति॥ शकुद्र्यां॥ शकुभ्यां॥ ददत्॥ ददती॥ वा॥ नपुंसकस्य॥

५९

अभ्यस्ता हनपुढिलचा जो शतचा जो अवयवतदंतजे क्लीवी वि
द्यमानजे अंगत्यासनुमविकल्पेकरून होय। सर्वनामस्थानपु
ढे अस्ताददंति। ददति। तुदत्ता आत्मीनयोः। नुमा अवर्णो
तजे अंगत्या हनपुढिलचा जो शतप्रत्ययाचा जो अवयवतदं
तजे क्लीवी विद्यमानजे अंगत्यासनुमागमविकल्पेकरून हो
य। शीपुढे० नदीपुढे अस्ता। तुदंती। तुदती। तुदंति। भात। भां
ती। भाती। भांति। पचत्। रापू स्योः। नित्ये। रापू अणिस्ये न
याचा जो अकारत्या हनपुढिलचा जो शतचा अवयवतदंतजे अंगत्या
सनुमागमहोय। शीनेदीपुढे अस्ता। पचंती। पचंति। दीव्यत्। दी

मध्य को.

पुंसो सुकु इत्यसुकु।

६०

ज्यंती। दीव्यंति। धनुः। धनुषी। सांतेति दीर्घः। नुम्विसर्जनीये
तिष्ठः। धनूंषि। धनुषा। धनुभ्यां। एवं च क्षुर्हविरादयः। पयः। प
यसी। पयंसि। सुपुम। सुपुंसी। सुपुमांसि। अदः। विभक्तिकार्यं।
उत्तमत्वे। अमू। अमूनि। शेषं पूर्वतः॥ ॥ इति हलन्तानपुंसकलि
गाः॥ ॥ स्वरानि निपाते। अव्ययं। स्वरानि कजे अणखीनि
पातसंभक्तजेते अव्ययसंभक्तहोत्। स्वर। अंतरे। प्रातरु। पु
नरु। सनुतेरु। उच्चैस्। नीचैस्। शनैस्। ऋधक्। क्रुतो। युगप
त्। आरात्। पृथक्। ह्यस्। श्वस्। दिवा। रात्रौ। सायं। विरांम
नाक्। ईषत्। जोषो। नूळी। बहिस्र। अवस्। समया। निकषा।

६०

स्वयं। वृथा। नक्तं। नन्। हेतो। इहा। अद्वा। सामिवत्। ब्राह्मणवत्। क्ष
त्रियवत्। वत्। सना। उपधा। सनत्। सनात्। तिरसा। अंतरा। अंतरेणा।
मकु। ज्योका। योका। कां। शो। सहसा। विना। नाना। स्वस्ति। स्वधा। अले।
वषट्। श्रौषट्। वषट्। अन्यत्। अस्ति। उपोम्भु। क्षमा। विहायसा। दो
षा। मेघा। मिथ्या। मुधा। मुधादि सम्पा। पुरा। मिथो। मिथसु। प्राय
सु। मुहुसु। प्रवाहिके। प्रवाहिका। आर्यहलं। अभीक्ष्णं। साकै। सा
हू। नमसु। मनसु। हिरुक्। धिक्। अथ। अम्। आम्। प्रताम्। प्रशा
म्। प्रशान्। प्रतान्। मो। मोडु॥ ॥ आकृतिगणोयं॥ ॥ च॥ वा॥ हा॥
अहा। एवा। एवं। नूनं। अश्वतो। युगपत्। भूयसु। कूपत्। सूपत्।
कुवित्। नेत्। चेत्। चण्। यत्। तत्र। क्वचित्। नह। हंत। माकिः।

मध्य-को-

६९

माकीं। आकिः। आकीं। नकिः। माउ। नः। यावत्। तावत्। त्वे। द्वे। न्वे।
रे। श्रौषट्। वोषट्। स्वाहा। स्वधा। वेषट्। तुम्। तथाहि। अथ। स्फुल्लं। कि
लाअध। सुष्टु। दुष्टु। स्मा। आदह। उपसर्ग। विभक्ति। स्वरप्रतिरूप
काः। च। उपसर्ग। सारस्वेअणस्वीविभक्तिसारस्वेअणस्वीस्व
रासारस्वेजेत्तिहिनिपातसंज्ञकहोत्। अवदत्तं। अहंयुः। अस्ति
क्षीरा। अ। ओ। इ। ई। उ। ऊ। क्र। क्। ल। ए। ऐ। ओ। औ। पशु। भु
कां। यथा। कथा। चापाट्। प्याट्। अंग। हे। हे। भोस्। अयो। अद्य।
विष्णु। एकपदे। युत्। आतेः। चादिरव्याकृतिगणः। चादिकृजेते
हीआकृतिगणजाणावे। तद्वितः। च। असर्वविभक्तिः। यस्मात्।

६९

य

या हन सर्वविभक्तीचा प्रयोग स. उच्चारण घडत नाही असे जें
 तद्धितों ते ते हीं अव्यय संज्ञक होय। परिगणने कर्तव्य। स. मो जावें।
 तशिल प्रत्ययास आदिक रूपां पारा प्रत्यय पर्यंत अण रवीश
 सम्ययास आदिक रूपां समासं त प्रत्यय पर्यंत अम आमक
 त्वार्थक प्रत्येत सिवति ना अण रवी ना अ द्रुति इतके एते दंत हे आ
 हेतु अंती जावे अशी जीं शब्द स्वरूपे तीं हीं अव्यय संज्ञक होत।
 अतः या हेतुस्तव जी पूर्वोक्त तद्धितों त शब्द स्वरूपे तीं अव्यय सं
 शक होत। ते न ॥ त्या को रणास्तव इह एथे न शाले। पचति रूपं।
 पचति कल्पं। एथे अव्यय संज्ञा न शाली। कृन्मे जंतः। कृ दंत जे

मध्य-को.

६२

मां त अण रवी ए जं त त दं त जे शब्द स्वरूप ते अ व्यय संश क होय ।
स्मारं । स्मारं । जीवसे । पिव ध्ये । का तो सु नः । हे आ हे त अं
ती जावे असे जे शब्द स्वरूप ते अ व्यय संश क होय । क लो । उ दे
तोः । विसृ पः । अव्ययी भावः । च । अव्ययी भाव जो समा स तो ही
अ व्यय संश क होय । अधि हरि । अव्यया त् । आ कृ पः । अव्यया
हू नू विहित जो आप अण रवी सु पू त्या चालु के होय । तत्र शाला
यां । अव्यया हू नू विहित ल . के लु असे वि शेषेण के ले आ हे या स्त
व ने हल . ए थे ने शाला । अ लु सौ सौ । अव्यय संशे चा ठा ई य द्य पि
ल . ज ही त दं त विधी आ हे त धा पित से अ स्ता ही जो णा चे ठा ई न होय ।

६२

आपग्रहणं व्यर्थं। अव्ययासलिंगबोधकत्वनाही। तसे अस्ताही
 श्रुति॥ लिंग अणखी कारक अणखी संख्या याचा जो अभव त्या
 चीही श्रुति सांघणार। तिही लिंगाचे ठाई सदृश। समान सर्व
 विभक्तीचे ठाई सर्व वचनाचे ठाई पद। जे नव्य पतिल। विका
 रासुनाही पावत त्यास अव्यय असे लोकोवे। भागुरि नामा रूषि
 जो तो अव अणखी अपि हे जे उपसर्ग याचा जो अकार त्याचा
 लोप वरि नाम इच्छितो। हलें तजी शब्द स्वरूपें त्यास आप इच्छि
 तो यथास्त-ज संवाचा निशा दिशा। वेगाहः। अवगाहः। पिधा
 नं। अपिधानं॥ इति अव्ययानि॥ ॥ इति श्री वरदराज भट्ट विरचिते
 ताम्रं मध्यसिद्धं तको मुयां सुर्वंतं समाप्तं॥ ॥ श्री गुरुनाथार्पणमस्तु॥

साहू

श्रीगणेशायनमः॥ स्त्रियां अधिकारोयं। स्त्रियां हा अधिकारजो तो
 समर्थानां प्रथमाद्यासूत्रपर्यंत जाणावा। अजाद्यतः। हा प्र। अजा
 दिकुजे शब्द अणस्वी अकारांत जे शब्द याचे वाच्य जें स्त्रीत्व लक्षणे
 तें स्त्रीत्व वाच्य अस्ताटापु होय। अजा। अजादिकुजे तीं हीं स्त्री
 त्वविशेषणास्तव इह न। पंचाजी। पंचाजी शब्दाचे ठाई समासार्थ
 जो समाहार तं निष्ठुजे स्त्रीत्व ते बोध्यं। अतः। खट्वा। अजा। एडका।
 अभा। चटका। मूषिका। बाला। वल्सा। हुडा। मंदा। विलाता। मेधा।
 संभस्त्राजिनशाणविंडेभ्यः। फलात्। हे जे शब्द त्याहून पुढीलचा
 जो फलशब्द त्याहून टापु होय। संफलात् इत्यादि। सदचू कांडप्रा

सर्गा

मध्य-को.

स्त्रीप्र.

तशतेकेभ्यः। पुष्पात्। हेजेराब्द एतत्पूर्वकजोपुष्पराब्दस्याहन्
टापूहोय। सत्पुष्पा। प्राक्पुष्पा। प्रत्यक्पुष्पा। भूद्राच। अमहत्पूर्
व। जातिः। अमहत्तल। महत्तलराब्दपूर्वीनाहिजाचेअणिजातिवा
चक्असाजोभूद्रराब्दस्याहन्टापूहोय। पुरुषसंबंधतरअसला
तरभूद्गी। अमहत्पूर्वकिं। महत्भूद्गी। कुंचा। उच्छिहा। देववि
शा। ज्येष्ठा। कनिष्ठा। मध्यमा इतिपुंयोगेपि ज्ञेयं। कोकिलाजा
तावपिस्त्री। जातिवाच्यअस्ताही। टापू। मूलात्। नअः। नभूपूर्
वकजोमूलराब्दस्याहन्टापूहोय। अमूला। उगितश्चेतिङिपू

९

भवन्ती। पचन्ती। वनहारः। च। वनप्रत्ययां तवन्तं तज्जेशब्दस्वरु
 पत्याहून् अणरदीतदंताच्च। वन्तं तआहे अंती जाचे तदं तज्जेश
 व्दस्वरुपत्याहून् डीपू होय। रेफजो तो अंतादेश होय। सुत्वाने अति
 कांता। अतिसुत्वरी। अतिधीवरी। शर्वरी। वनः। न। हरः। हर
 तज्जोधातु त्याहून् विहित। केला वनप्रत्यय तस्मात् त्याहून् डीपू
 न होय। आणु। अपनयना। अवावा। स्म। ब्राह्मणी। राजयुध्या।
 बहुव्रीहौवा। बहुधीवरी। बहुधीवा। पादः। अन्यतरस्यां। पा
 दराब्दाहून् डीपू विकल्पे कर्तुं होय। द्विपदी। द्विपात्र। टापू। ऋचि।

मध्य-कौ.

स्त्री प्र.

रूचा वाच्य अस्ता टा प्रहोय। द्विपदा। अंको। एकपदा। मनः। मुन्
प्रत्ययां तजेशब्दस्वरूपत्याह नूडि पुन होय। सीमा। सीमानौ।
अनः। बहुव्रीहेः। अन्नंतजो बहुव्रीहीत्याह नूडि पुन होय। बहु
यज्वा। बहुयज्वा नौ। टा प्र उभाभ्यां। अन्यतरस्यां। सन्नंत अन्नं
तसूत्रद्वयोच्चेठाई उपात्तमे-सागि जे लजे त्याह न टा प्र विकल्पेक
रून् होय। सीमा। सीमौ। सीमानौ। दामा। दामौ। दामानौ। अनः।
उपधा लोपिनः। अन्यतरस्यां। अन्नंत उपधा लोपी असा जो व
हु व्रीहीत्याह न विकल्पेक रून् नूडि प्रहोय। पक्षे टा प्र अणखी निषे

२

ध होतु। बहु राक्षी। बहु राक्षो। बहु राजे। बहु राजानो। प्रत्ययस्था
 त्। कात्। पूर्वस्य। अतः। इत्। आपि। असुपः। तो आपूजो तो सु
 पः पर न से लज्जर तर इत्व होय। सर्विका। कारिका। अतः किं। नो
 का। प्रत्ययस्थात् किं। शक्नोतीति शका। असुपः किं। बहु परिजा
 जका। न गरी। मामक अण रवी नरक यो शब्दोच्चारणम्
 जो ककार त्याह न पूर्विल्ल च अकार त्यास इत्व बोलावे। मामिका।
 नरिका। त्यक्त्येषोः। च। त्यक्त अण रवीत्यपू ~~स्य~~ एतदंतर्जिह्व
 स्वरूपे त्यास इत्व बोलावे। दाक्षिणात्यिका। इहल्यिका। न। मास
 योः। मत्। तद्। याचा जो अकार त्यास इत्व न होय। यका। सका।

मामक नरक यो रूप संख्या नं। ५

मध्य-को.

स्त्रीप्र-

त्यक न प्रत्ययां त जे शब्द स्वरूप त्या स इत्वन होय। उपत्यका। अधि
त्यका। आशि विबुन श्रान आ शीर्वा दार्थी जो बुन प्रस्यत दंता
सही इत्वन होय। जीवतात्। जीवका। भवका। उत्तरपदलोपे। ना
देवदत्तिका। देवका। क्षिपको दीनां। च। ~~क्षिप~~ इत्वन। क्षिपका। ध्रु
वका। चटका। कंन्यका। तारका। ज्योतिषि। नक्षत्रवाच्य अस्तां इ
त्वन होय। वर्णका। तांतवे। तांतवरूप अर्थ इत्वन। वर्तका। राकु
नी। प्राचां। राकुनिस्रपक्षिरूप अर्थ वाच्य अस्ता इत्वन। अष्टका
पितृदेवत्ये। इत्वन। सूतका। पुत्रिका। वृंदा रकाणां। वेतिवर्त
व्यं। यां शब्दा स इत्वन विकल्पे कर नूबो लावें। एषां वा अकारो

३

भवतीत्यर्थः। सूका। सूतिकेत्यादि। उदीचां। आतस्थाने। यकपूर्व्याः।
यकपूर्वकजोस्त्रीप्रत्ययल्याचो जो आतस्थानिकजो अकार तोक
साकापूर्वकल्यासविकल्पेकरुन इत्वहोय। आपपुठेअस्ता। केण
इतिरूस्वः। आर्यका। आर्यिका। चटकका। चटकिका। अतः कि
म। साकाश्ये भवासां कारिका। यकेति किं। अश्विका। स्त्रीप्रत्य
यः किं। शुभंयिका। अभाषितपुंस्कात्। च। एतस्मात्तनाम अभा
षितपुंस्कात् हन्विहितल. केला जो आतस्थानिक अकार त्यास इत्व
विकल्पेकरुन होय। गंगका। गंगिका। आत्। आचार्याणां। पूर्ववि
षय अस्ता। गंगाका। अनुपसर्जनात्। अनुपसर्जनात् ह अधिकार

मध्य. को.

स्त्री. प्र.

जाणावा। यूनस्तिः यासूत्रासघेउन। दिहुण अद्वयसज्जदघ्नमान
चेतयपठकूठअकअर्धरपः। अनुपसर्जनम. गोणनहेअसेदिदा
दितदंतजेअदंतत्याहेनडीपहोयाकुरुचरी। उपसर्जनम. गोणत्वा
स्तिवडहन। बहुकुरुचरा। नदट्ट। नदी। देवट्ट। देवी। सोपल्लेयी। ऐं। द्री।
ओत्सी। उरुद्वयसी। उरुद्वप्ती। उरुमात्री। पेचतयी। आक्षिकी। लोव
णिकी। यादृशी। इत्तरी। नमस्मयीकुकख्यंस्तरुणतलुनानां।
उपसंख्यानां। स्त्रेणी। यौंस्त्री। शाक्तीकी। ओट्टयेकरणी। तरुणी।
तलुनी। यमः। च। अकारलोपकेलाअस्ता। हलः। तद्वितस्याहला
हनपुढीलउपधाभूततद्वितजोयकारत्याचालोपहोया। गागीं।

४

असा

वाचां। पुस्तक तद्वितः। यजंता हनूष्प्रप्रत्ययविकल्पेकरुनहोय। गा
ग्यायणी। वयसि। प्रथमे। प्रथमवयवाचिजो अदंत लोहूनीपू
होय। कुमारी। वयसि अचरमइति वाच्यं। वधूटी। चिरंटी मोवनवा
चिनो। द्विगोः। अदंत जो द्विगु संज्ञक ल्या हनूनीपू होय। त्रिलोकी अ
जादित्वा तं नाम अजादिगणे पठितत्वात् त्रिफलो। च्यनीका। अप
रिमाण विस्तारित कंबल्येभ्यः। न। तद्वित लुकि। अपरिमाणा
तस्य परिमाणं तनसेल विस्तार्य त असा जो द्विगु ल्या हनूनी
पू न होय। तद्वित लुक् अस्ता। पंच भिरभ्यः। कीता पंचाभ्या।
ओर्हीयष्ठक। अ ध्वज इति लुक्। द्वौ विस्तौ पचति। सा द्वि विस्तौ।

चरमल
वृद्ध

मध्य-को.

स्त्री प्र.

द्विकं बल्या। परिमाणानुद्धातकी। तद्वितलुकि किं। समाहारे पं
चां श्री। कंडां ता तद्वेत्त। क्षेत्ररूप अर्थ वाच्य अस्ता कंडा शब्दो तजो
द्विगुल्या हून डी पुन होय। तद्वितलुक अस्ता द्विकंडा प्रमाण अस्याः
सा द्विकंडा। क्षेत्र भक्तिः। मात्र चः प्रमाणे लो द्विगो नित्यमिति।
लुक। क्षेत्र किं। द्विकंडा रज्जुः। पुरुषात्। प्रमाणे। अन्यतरस्या।
प्रमाणार्थ वाच्य अस्ता पुरुष शब्दो तजो द्विगुल्या हून डी पुन वि क
ल्ये क रू न होय। तद्वितलुक अस्ता। द्वौ पुरुषौ प्रमाणे अस्याः सा
द्विपुरुषी। द्विपुरुषा। वापरिखा। उधसः। अनड्। उर्ध्वं तजो
बहु ग्रीहीत्यास अनड् असा आदेश होय। स्त्री वाच्य अस्ता।

शब्दो

५

बहु श्रीहः पुधसः। ऊिष पुधसः शब्दं तजो बहु श्रीहः। हः नू डीष
हय। कुंडो धी। स्त्रियां कि। कुंडो धो धेनु कं। दामहाय नो ताता च।
संख्या दिक् दामांत अथ वा हाय नो त असाजो बहु श्रीहः। हः नू
ऊिष। द्विदाम्नी। द्विहाय नी बोला। त्रिचतुर्भ्यो। हाय नस्य। णत्वं
वाच्यं। त्रिशब्द अणखी चतुरशब्द त्याह न हाय न शब्द वाच्यो
नकार त्यास णत्वं बोलावे। वयो वाचक जो हाय न शब्द त्यास च
ऊिष अणखी णत्वं इष्यते इ छिजेंतें। त्रिहायणी। चतुर्हायणी।
वयवाच्य नस्ता ऊिष णत्वं न होय। त्रिहायना। चतुर्हायना। शा
ला। अंतर्वत् पतिवत्तोः। नुका अंतर्वत् अणखी पतिवत् तजेशब्द
त्यास नुका गम होय। नांतलो त ऊिष। अंतर्वत्। पतिवत्। ग

मध्य. को. गर्भभट्ट मिल्लार्थे अंतः अस्ति अस्यां श. कामं घटः असेवा कथं स्त्री प्र.
 रमभर्तृयाचा संयोग अस्ता नुगागम अणखी की प्रहेजे ते होतों राहिले
 वसिष्ठस्य पत्नी। विभाषा। स पूर्वस्य। स पूर्व कुजो पति शब्द
 त्यास नुगागम विकल्पे करून होय। गृह पत्नी। गृह पतिः।
 दृढ पत्नी। दृढ पतिः। नित्यं। स पत्न्यादिषु। स पत्न्यादि कुजे
 शब्द त्याचे ठाई नित्य नुगागम होय। स पत्नी। एक पत्नी। वी
 र पत्नी। पूत कर्ताः। ऐच। पूत कर्तृ शब्दास ऐच असो आद
 श होय। पूत कर्ता स्त्री। पूत कर्तायी। वृषाकप्य ग्निकु सित कु
 सिदानां। उदात्तः। एषो हे जे शब्द यांस उदात्त ऐ ओ देश होय
 अणखी की प्रही होय। वृषाकपे स्त्री वृषाकपायी। अग्रे स्त्री
 पति मती एथिची। पत्युः। नः। यश संयोगे। यश संबंध अस्ता पति
 शब्दास नुगागम होय। की प्र।

अग्रायी। कुसितस्य स्त्री कुसितायी। कुसिदायी। मनोः। ओ। वा।
 कार मनुशब्दास औ आदेश होय अणखी उदात्त एकार आदेश होय वि
 कल्पे करुन ल्यां शी संनियोग शिष्टी पूही होय। मनायी। मना
 बी। मनुः। वर्णदनुदात्ता तोपधात्त। तः। नः। वर्णवाची जो तोप
 धतदंत जें प्रातिपदिक ल्या हून डी पू होय। तकारासनकार
 ही होय। एता। एनी। रोहिता। रोहिणी। चित्र। गौरादिभ्यः। च।
 विदंत जें प्रातिपदिक अणखी गौरादिकु जें शब्द ल्या हून डी
 पू होय। नर्तकी। गोरी। अनडुही। अनडुही। पिप्पल्यादयः।
 च। पिप्पल्यादिकु जें शब्द ल्या हून डी पू होय। आरुतिगाणः।

मध्य. को.

स्त्री प्र.

अयं। मत्स्यस्य। अं। मत्स्यशब्दाचा जो मकार त्याचा लोप हो
यडि. पुढे अस्ता। मत्सी। जानपदा। कुंडा। गोणा। स्थला। भाजी।
नागा। काल। नील। कुशा। कामुका। कबरात। वृत्ति। अमत्र। आव
न। अकृत्रिमा। आ। आण। स्थो। ल्यवर्ण। अनाच्छादन्। अयोविक
रमैथुने। शाके। शवे। शेषु॥ एकादशजी। प्रातिपदिके। त्याहून क्रमेक
रुचुत्यादिरूप अर्थी। निपू होय। जानपदी वृत्तिश्चेत्। अन्य। जान
पदी। अजंताहून। निपू केला अस्ता। आद्युदारः। कुंडी। अमत्रं च
त। अन्य अर्थी। कुंडा। गोणी। आवपनेचेत्। गोणान्या। स्थली। अ
कृत्रिमाचेत्। स्थलान्या। भाजी। आण। चेत्। भाजान्या। यद्यगू

७

रुद्धिकाश्राणाविलेपीतरलाचसाइत्यमरः। नागी। स्थूलचेतना
 गान्या। कालीवर्णश्चेत्। कालान्या। नीली। अनाष्टादनंचेत। नीला
 न्या। कुशी। अयोविकारश्चेत्। कुशान्या। का। मुकी। मेथुनेषाच
 त्। कमुकान्या। कबरी। केशानां सन्निवेशश्चेत्। अन्यातुकव
 रा। शोणात्। प्राचा। शोणशब्दाहूनङीपूविकल्पेकरूनहोय।
 शोणी। शोणा। वा। उतः। गुणवर्चमात्। गुणवाचिजोमुकोरां
 तशब्दस्याहूनङीपूविकल्पेकरूनहोय। मृद्वी। मृदुः। उतः
 किं। सुविः। गुणेकिं। आखुः। खरु संयोगोपधात्। नै। खरुश
 ब्दअणखीसंयोगोपधासंयोगआहेउपधास्थानीज्याचेअसाजो

विशेष

मध्य-को-

स्त्रीप्र-

राब्द त्याहूनूनी पुन होया। खरुः। पांडुः। बह्नादिभ्यः। च। बह्नादिकजे
राब्द त्याहूनूनी विकल्पे करूनूनी पुहोया। बह्नी। बहुष्ट। कदिकारातर। अ
क्तिनः। क्तिनर्थ कजो नाही अस जो क्तर संज्ञ कजो इकार त्याहूनूनी वि
कल्पे करूनूनी पुहोया। रात्रिः। रात्री। सर्वतः। अक्तिनर्थ ता। इति।
एके। अक्तिनर्थ कजो सर्व इकार त्याहूनूनी विकल्पे करूनूनी पुहो
या। एके एकाचे मती। राकटिः। राकटी। पुंयोगातर। आख्याया।
जीपुंमोख्या पुंयोगास्त वस्त्री लिंगी जाल्ये त्याहूनूनी पुहोया। गो
पस्य स्त्री गोपी। पालकांतात। न। पालके राब्द आहे अंती जाचे
त्याहूनूनी पुन होया। गोपालिका। अश्वपालिका। सूर्यारादेव

तायां। चापू। वाच्यः। सूर्यशब्दाहू नू देवता अर्थवाच्य अस्ताचा पूर्वोला
वा। सूर्यस्य स्त्री देवता सूर्या। देवतायां किं। सूर्या। कुंती। इन्द्रवरुणभवरा
वरुण इन्द्र हिमाराण्य यव यवन मातुल आचार्याणां। आनुकू। डीपू। चा
इन्द्रादिकुजे साराब्द अणखी मातुल आचार्य जेशब्दत्वां संपुं योगे अ
स्ताच डीपू अणखी आनुकू होया। तत्र डीपिसिद्धे आनुग मात्रे विधीय
ते इतरेषां चतुर्णां उभयं। इन्द्रस्य स्त्री इन्द्राणी। हिमाराण्ययोः। महत्वे
महत्त्व वाच्य अस्ता हिम अरण्य याहू नू डीपू आनुकू होया। महद्दि
मं हिमानी। महत् अरण्य अरण्यानी। यवात्। दोषे। दोष वाच्य अ
स्ता यवानी असा प्रयोगः दुष्टो यवो यवानी। यवनात्। लिप्यां लि

मध्य को.

स्त्री प्र.

विवाच्य अस्ता यवन शब्दा हनू डी प्र होय अण स्वी अर्नु क होय। य
वनानो लिपि र्वनानी। मातु लो पा ध्या य योः। आनु कु। वा। भा
तु उ उ पा ध्या य यो शब्दा स आनु क विकल्पे क र न होय। मातु ली
नी। मातु ली। उ पा ध्या यी नी। उ पा ध्या यी। आ चो यो र्। अण लो। च।
आ चो र्। नी। अ र्ध क्ष त्रि या भ्यां। वा। स्वार्थे। अ र्धो नी। अ र्धो। क्ष
त्रि या नी। क्ष त्रि या। पुं यो गे तु। पुरुष सं बंध अस्ता अ र्धो। क्ष त्रि यी।
की ता त्। करण पूर्वी त्। करण पूर्व कु जो की त शब्द अ दंत त्या
हनू डी प्र होय। वस्त्र की ती। क वि त्। न। धन की ता। व हु प्री हिः।
च। अंतो दा ता त्। संत अंतो दा त् अ सा जो व हु प्री ही त्या हनू
डी प्र होय। उरु मि न्नी। अ स्वांग पूर्व पदा त्। वा। पूर्व सूत्रे क

रुन्रनित्यपावलाअस्ताविकल्पोयं।सुरापीती।सुरापीता।स्वा
गात्र।च।उपसर्जनात्।असंयोगोपधात्।असंयोगोपधउपस
र्जनजेस्वांगतदंतजोशब्दस्याहूनृजिषविकल्पेकरुन्रहोयाअ
तिकेशी।अतिकेशा।चंद्रमुखी।चंद्रमुखी।संयोगोपधात्।सुगु
ल्फा।उपसर्जनात्किं।शोभना।रवासुशिरवा।स्वांगंविधा।शि
अद्रवन्मूर्तिमस्वांगं प्राणिस्थमविकारजं।अतस्थंतत्रदृष्ट्वे
तेनचेत्तत्तथायुतं॥सुखेदा।द्रवत्वात्।सुज्ञाना।अमूर्तत्वात्।सु
मुखाशात्।अप्राणिस्थत्वात्।सुशोफा।विकारजत्वात्।सुकेशी।
सुकेशानारथ्या।अप्राणिस्थस्यापि प्राणिनिदृष्टत्वात्।सुस्तीनीसु

मध्य-को.

स्त्रीप्र.

विष

जोखोंगवा
चक्र

स्तनावाप्रतिमा। प्राणिवत्प्राणिसदृशस्थितत्वात्॥ नासिकाउदरओ
ष्ठजंघादंतकर्णशृंगात्वाच। वा। डीषु। नासिकादिकुजे शब्दत्वाहन्
डीषुविकल्पेकरुनहोय। तुंगनासिकी। तुंगनासिका। पुष्पात्वाच।
सुपुष्पी। सुपुष्पा। कवरमणिशरेभ्यः। नित्यं। कवरपुष्पी। उपमानात्।
पक्षात्वाच। पुष्पात्वाच। उपमानपूर्वकुजोपक्षशब्दआणिपुष्पशब्द
त्वाहन्हीडीषुहोय। उलूकपक्षीशाला। उलूकपुष्पीसेना। न। को
डादिवहचः। कोडादिके ~~वहच~~ जोखोंगत्वाहन्हीडीषु वाचक्र
नेहोयाकेल्याणकोडा। आकृतिगणोयं। सुजघना। सहनम् कोडेभुजोंतं
विद्यमानपूर्वात्वाच। सहपूर्वकुनअपूर्वकुविद्यमानपूर्वकुजेषा

१०

त्रिपदिकृत्याह नूडी पून होय। सकेरा। अकेरा। विद्यमाननासिका।
 नखमुखात् संज्ञायाम्। नखशब्दअणिमुखशब्दयाह नूडी पून हो
 य। शूर्पणखा। गौरमुखा। संज्ञायाम् किं। ताम्रनखीकंन्यो। वाहः। वा
 हांतजोशब्दयाह नूडी पू होय। दिल्यो ही। सखी। अशिम्बी। इति। भाषा
 याम्। सखी। अशिम्बी। जातेः। अस्त्रीविषयात्। अयोपधात्। जातिवा
 चकृस्त्रिलिङीविषयानियतनसेलयकारोपधनसेलअसाजो
 वदयाह नूडी पू होय। आकृतिग्रहणात्। जातिलिङीनां च न सर्वभा
 वः। सकेदारव्या न निग्रीह्या गोत्रं च चैरणीः सह। घटी। वृषली। औ
 पगवी। कठी। जातेः किं। मुंडा। अस्त्रीविषयात् किं। बेलीका। अयो

३ असर्वलिङगत्वे सति एकस्यां व्यक्तौ कथनात् व्यक्त्यंतरे कथनं विनापि सुग्रहजातिरिति लक्षणांतरं ३
 २ अपत्यप्रत्ययान्तः शारवाधेतवाची च शब्दो जातिका र्मेल भत इत्यर्थः ॥ २

पधात्किं। क्षत्रिमा। यो पध प्रतिषेधे गवय हय मुकय मनुष्य मत्स्यानां
 अप्रतिषेधः। गवयी। हयी। मुकयी। मनुषी। मत्सी। पाक कर्ण पर्ण पु
 ष्य फल मूल वालोत्तर पदार्थ। पाका दिक्क ओहेत् उत्तर पद जास
 असे जे जाति वाचक स्त्री विषय अस्मा ही निपु होये ओदन पाकी। शं
 कु कर्णी। शाल पणी। शंख पुष्पी। दासी कली। दर्भ मूली। गो बाली।
 औषधि विशेष रूढाः। इतः। मनुष्य जातेः। इकारो ते मनुष्य जा
 ति वाचक जो शब्द ल्या हन डी बू होय। दाक्षी। कुडु। उतः। अयो
 पध मनुष्य जाति वाचक जो उकारो तस्या हन कुडु होय। कुरुः।
 पंगोश्च। पंगूः। श्वशुरेशब्दा च जो उकारो अणो रे वी अकार ल्या

पद

नालोपहोय। चकारासावकुडु। होय। पुंयोगलक्षणजो डिषु त्याचा मू
पवादक। श्वश्रुः। उरुतेरपदाते। ओपम्ये। उपमानवाचकपूर्वपदउरा।
हेजासकुसुआहेउत्तरपदजासुअसाजोशब्दत्याहूनकुडु। होय। करमा
रुः। सहितशकलक्षणवामादे। च। हे शब्दआहेतुआदिसंज्ञास
लक्षणकुसुआहेउत्तरजासत्याहूनकुडु। होय। सहितोरुः। सहितस
हाम्यो। च। सहितोरुः। सहोरुः। शाईरेवाद्यमः। इति। शाईरवा
दिकुजोशब्दअणखीअआचाजोअकारतदंतर्जोतिवाचक
त्याहूनइतिनूहोय। शाईरवी। बेदी। ननरयोः। वृद्धिः। च। नोरी
पडुः। चाप। यडुं। ताहूनचापसंभहोय। आंब। कोरीषगंध्या।
वाद्यंअश्रोपूवाच्यः। पोतिमाष्या। आवट्यात। च। अस्मात्तना।

स्त्रीप्र.

मध्य-को.

१२

मआवट्यशब्दाहूनचाप्रहोययश्चेतिजिपोपवादः। अवट
शब्दोगगोदिः। आवट्या। यूनः। तिः। युवनशब्दाहूनतिप्रत्य
यहोय। युवतिः। अनुपसर्जनेन। मुख्यस्याहूनचेतिप्रत्ययहो युरतीतु
य। वहवो नाम बहूत आहो ततरुणजेतेजीचेठाई। युवतीहत्ता
व्यजोतोतरशब्दप्रत्ययान्तेजोयूधातल्याहूनजीपूकेलाअस्ता
बोध्यानावा॥ इति स्त्रीप्रत्ययाः॥ ॥

१२

श्रीगणेशाय नमः ॥ प्रातिपदिकार्थलिंगपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा प्राति
 पदिकार्थमात्रे लिंगमात्राद्याधिस्येपरिमाणमात्रे वचनमात्रे प्रथमा होय ।
 प्रातिपदिकार्थनामनियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः । नियमेकरुन्ज्य
 अर्थोऽस्मान् होते तो प्रातिपदिकार्थः । मात्रशब्दस्य प्रत्येकं योगः । प्रातिप
 दिकमात्रे उदाहरणमाह । उच्चैः । नीचैः । कृष्णैः । श्रुतैः । स्थानं । लिंगमात्रे उदा
 हरणमाह । तटः । तटी । तटं । परिमात्रे उदाहरणमाह । द्वेणो ब्रीहिः । वचनमा
 त्रे उदाहरणमाह । एकः । द्वौ । बहुवः । संबोधने । च । संबोधनरूपे अर्थवाच्य
 अस्ता प्रथमा होय । हे राम । कर्तुः । ईक्षित्तमं । कर्म । कर्त्तव्यं । जी क्रियाती
 ठे करुन् प्राप्नुं पायाया कारणे इष्टतमजें कारकतें कर्म संज्ञक होय । कर्म
 निदितीया । उक्तं न स्ता । कर्म उक्तं न स्ता द्वितीया होय । हरिं भजति । उक्तं क
 र्म अस्ता प्रथमा च होय । अभिधानस्य उक्तं प्रायेण स्य । बहुत करुन्ति । कर्तु

माण

कारक

मध्य. को. एषां धातूनां कर्मणा यत्सु व्यते तदपि अकथितं स्यात् ।
तद्वितसमासयाहीकरुन बोध्यं । प्राये ग्रहणात्तु च विनिपातेन अभिधानं बो
ध्यं । हरिः सेव्यते । लक्ष्म्या सेवितः । शतेन कीतः शयः । प्राप्तानंदः । क्रमात्
अमुं नोरदः इति अवोधिसः । अकथितं । च । अपादानादिविशेषजे अर्थस्य
अर्थाहीकरुन अविवक्षितजे कारकते ही कर्म संस्कृते य । दुःखाच्च पचुदंडरु
धिप्रष्टिचिब्रूशो सुजिमथमुषां । कर्मयुके स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृक्केष
हां । गोंदो ग्धिपयः । बलिं योचते वसुधां । तंदुलानोदनं पचति । गगान्श
व तंदंडयति । व्रजमवरूणद्धिगां । माणकं पंथानं पृच्छति । वृक्षमवचिनोति
फलानि । माणवकं धर्मं ब्रूते रास्तिवा । शतं जयति देवदत्तं । सुधां क्षीरधिं नि
मथ्नाति । देवदत्तं शतं मुष्काति । ग्राममजानयति । हरति कर्षति । वहति वा ।
अर्थनिबंधने इयं संज्ञा । बलिं भिक्षते वसुधां । माणवकं धर्मं भाषते ॥

अभिधत्ते वलीत्यादि। अकर्मक जेधातु त्यांशी योग अस्तां देश वाचक काल वाचक
 भाव वाचक गंतव्य जो अध्यात द्वीचक जे शब्द त्यास ही कर्म संज्ञा बोलावी। कुरुते
 स्वपिति। मोसमास्ते। गोदोहमास्ते। कोशमास्ते। गतिबुधिप्रत्यवसानार्थ
 शब्द कर्मकर्मकाणां। अणि। कर्ता। सः। णो। गत्यर्थक जेधातु अ
 णिशब्द कर्मक जेधातु अणस्वी अकर्मक जेधातु माचा अणो नाम
 अण्यतावस्थायां जो कर्ता तो ण्यतावस्थे चादी कर्म संज्ञक होय।
 शत्रवः स्वर्गं गच्छति। ही अण्यतावस्था होय। स्ववेदार्थ विदंति। देवाः
 अमृतं अश्नंति। विधिः वेदं अध्यति। हारि शब्द कर्मकाणां उदाहरणं। पृथ्वी
 सलिले आस्ता। ह अकर्मकाचे उदाहरण। यः नाम पूर्वोक्तः सः श्रीहरि
 जो तो मे गतिः नीव ह्योः। न। भृत्यः भारं नयति वहति वा। नीधातुव।

मध्य-को-

कारक

हधातुयां सगल्यर्थकत्वे कस्मृपावलेतेन होय। निधातूचा अणि बहुधातू
चा जो कर्ता तो जर नियंता असेल तर प्रतिषेधन होय। वाहाः रथं वहंति
इयं ही अण्यंता वस्था। आदिखाद्योः। न। आदि लि. अदधातुखादियाचा
जो अण्यंता वस्थे मध्ये कर्ता त्या सण्यंता वस्थेचा ठोई कर्म संज्ञान होय। व
दुः अनं अति। ही अण्यंता वस्था। अहिंसार्थक जो भक्षधातु त्याचा
जो अण्यंता वस्थे मध्ये कर्म संज्ञान होय। वेदुः अन्ते भक्षति। अहिंसार्थस्य
किं। बलिवर्दः सस्यं भक्षंति। जल्पति प्रभृतीनामुपसंख्या न। जल्पति
प्रभृति कजे धातु त्याचा जो अण्यंता वस्थे मध्ये कर्म संज्ञा बोलावी। पुत्रः
जल्पति। दुरोः। च। दशधातूचा जो कर्ता अण्यंता वस्थे मध्ये कर्म सं
भक्ताः हरिं पश्यति। शब्दायति। न। शब्दायति जो धातु त्याचा जो अण्यंता

२

त्यासण्यं ता. ईकर्मसंज्ञान होया. देवदत्तः शब्दं करोति। ह कोः। अन्यतरस्यां।
 दधातु अणखी कृधातु याचा जो अण्यं. त्यासण्यं ता. ईकर्मसंज्ञा विकल्पे कर्तु
 न होय। भूत्यः कटं हरति करोति वा। अभिवादिदृशोः। आत्मनेपदो वा।
 इति। वाच्यं। अभिपूर्वक जो वृद्धधातु अणि दृशधातु याचा जो अण्यं.
 त्यासण्यं. ईकर्मसंज्ञा विकल्पे कर्तु न होय। आत्मनेपद पुढे अस्ता।
 भक्तः देवं अभि वदति पश्यति वा। अधिशीड. स्थासा। कर्म। अधि
 पूर्वक जो शीड. अणखी स्था असू हे जो धातु याचा जो आधार लोक
 मसंज्ञक होय। हरिः वेकं ठे अधिशेते. ० रा. अभिनिविशः। च। अभि
 निवृत्त संघात पूर्वक जो विशाधातु त्याचा जो आधार तो ही कर्मसं
 ज्ञक होय। सन्मार्गे अभिनिविशते। कंचिन्न। पापविषई शान आह।

प्रध-को-

अभुत्स्यर्थस्य तु न ॥ २

कारक

उपा न्व ध्यातु ॥ वसुः ॥ उप अनु अधि आ इ ॥ एतत् पूर्व कृ जो व स धा तु
ल्या चा जो आ धा र तो क र्म सं श क हो या ॥ हरिः वै कु ठे उपे व स ति ० ३ ॥ भुत्स्य
थं कृ ने के अ सा जो व स धा तु ल्या चा जो आ धा र तो क र्म ० न ॥ व ने उपे व
स ति ॥ उ भ सर्व त स्योः का र्यो धि गु प र्यो दि षु त्रि षु ॥ द्वि ती या मे डि तां तेषु
त तो न्य त्रा पि दृ श्य ते ॥ उ भ य तः सर्व तः या शी यो ग अ स्ता द्वि ती यो क र्म
वी ॥ धि ग शब्दा शी यो ग अ स्ता द्वि ० आ मे डि तां त जे उप र्यो दि के स्यां चा वा
ग अ स्ता द्वि ० अ न्य त्रा पि दृ श्य ते ॥ कृ ष्य उ भ य तः गो पाः स्ति षं ति ॥ कृ
छा चा जो अ भ क्त स्य धि के ॥ लो क स्य उप र्पु परि हरिः ॥ २ ॥ अ भि तः
परि तः स म या नि क षा हा प्र ति या चा यो ग अ स्ता ही द्वि ती या दृ श्य ते ॥
कृ ष्य अ भि तः ॥ ग्राम स्य नि क षा ॥ कृ ष्य अ भ क्त स्य हा ॥ बु भु क्षि

कार्यस-

तस्य न प्रतिभाति किंचित् । अंतरांतरेण । युक्ते । अंतरा अणखी अंतरेण या
शी योग अस्ता द्वितीया होय । युवयोः आवयोः हरिः अंतरा । हरेः अंतरे वाचून्
ण सुखं न । कर्म प्रवचनीय अशी जी संशी तीचो अधिकार जाणावा ।
अनुः । लक्षण । लक्षण वाच्य अस्ता अनुजो तो कर्म प्रवचनीय संशक
होय । गति संशक अणखी उपसर्ग संशक इची कर्म प्रवचनीय संशक अप
वादिका । कर्म प्रवचनीय युक्ते । कर्म प्रवचनीयाचा योग अस्ता द्वितीया
होय । लक्षण वाचक जो अनु तो कर्म होय । जप मनु प्रावर्षत् । हे तु भूत जो
जप त्याचे उपलक्षण हे वर्षण । तृतीयार्थ । तृतीयार्थ जो अनु तो कर्म प्र
संशक होय । न हीं अन्व वसिता सेना । न ही जी तीणे शी संशक होय । जो
उक्ती । हीन । हीनार्थक जो अनु तो उक्त संशक होय । अनु हरिं सुराः ।

मध्य-को-

सुरजेदेवजेते हरिपेक्षाउणे। उपोधिकेच। अधिकरूपअर्थीहीनार्थीजोउपतो
 प्राग्वत्सु-कर्मप्र-संसकु। अधिकार्थीसप्तमीसागू। हीनेउपहृदिं सुराः। ल
 क्षणेथंभूतारव्यानभागवीप्सासु। प्रतिपर्यनवः। लक्षणार्थीइत्थंभूतारव्या
 नार्थीभागार्थीवीप्साथीजेप्रतिपरिअनुतेकर्मप्रव-संसकहोत। लक्षणार्थी
 उदाहरणमाह। वक्षाचे। समिपविद्युत्नामविद्युक्तजेतेविद्योत
 तेनमत्ते। परिअनुना। इत्थंभूतारव्यानेविष्णोःअयंभक्तः। प्रतिपर्यनुवा।
 भागे। लक्ष्मीजेतेहरीचाभागहोय। वीप्सायां। वक्षावक्षाससिंचनकर
 तो। एषुकिंपरिचिंचति। अत्रउपसर्गलनाहीलणूनषकारनहोय।
 अमिः। अभागो। भागवर्जलक्षणादिकूजेअर्थीयाअर्थीजोअमितोउ
 त्सु-कर्मप्र-होय। हरीचासमीपभक्तआह। हरीचाहामक्त। देवस्यदे

वस्य अभि सिंचति । अभागे किं । अत्र अस्मिन् विषये मासे जे असेल ते दे
 सु । पूजायां । पूजार्थ जो सुतो कर्म प्रवचनीय संसक होय । सुसिक्त । सुस्तु
 तो पूजायां किं । तब ल-तू से अत्र अस्मिन् विषये किं सुसिक्त कायतू से एथे
 आहो । श्रेयो वं ल-निदा एथे पूजा नाही । अतिः । अति क्रमणे च । चकारास्तव
 पूजा अर्थ अस्ता ही उक्त संसः । अति क्रमणार्थ जो अतितो कर्म प्र-संसक हो
 यो सुष्ठः देवानां आति । काला ध्वनोः अत्यंत संयोगे । काल वाचक अण
 स्वी अध्वा वाचक जो राब्द स्याह न द्वितीया होय अत्यंत संयोग अस्ता । इह द्विती
 या । मासस्य कल्याणी । कोशो कुटिलानदी । कोशस्य अधीते । कोश पर्यंत
 गिरी आहो । अत्यंत संयोगे किं । मासस्य एथे द्वितीयान । कोशस्ये कदे शो एथे
 ह द्वितीयान न ज्ञाती । स्वतंत्रः कर्ता । क्रियायां स्वातंत्र्येण विवक्षितो यो अर्थः

मध्य-को.

सः कर्ता। क्रिये चेठाई स्वातंत्र्ये करुन विवक्षित जो अर्थ तो कर्त्तृ संज्ञक होय। सा
 धकत संकरणं॥ क्रिये चीनी सिद्धि ती चेठाई अत्यंत जे कारण तें करण संज्ञक हो
 य। कर्त्तृकरणयोः। तृतीया। अनभिहितं। अनुक्तं जो कर्ता अणखी करण त
 होचक जो शब्द त्याहून तृतीया होय। रामेण बाणेन हुतो वाळी। राम कर्त्तृकं बा
 णं करण कंवा लीहून नमित्यर्थः। प्रकृत्यादिभ्यः उपसंख्यानं। प्रकृत्यादि
 कृजे शब्द त्याहून तृतीया बोलावी। प्रकृत्याचा रूप प्रायेण बहु प्रकारेण याज्ञि
 केः। गोत्रे करुन गार्ग्यः। समेनेति विषमेणेति। द्विद्रोणेन दोहो द्रोणे करुन
 धान्यं त्याते कीणाति घेतो। पंचकेन पशून् गृह्णाति। सुखेन दुःखेन याती
 त्यादि। दिवः। कर्म। च। दिवधातूचे जे साधक ते कर्म संज्ञक होय चकारा सब
 करण संज्ञक होय। अक्षरक्षान् वा दीव्यति नाम कीटी करतो। सहयुक्ते। अप्रधाने।
 तम

मध्य-को.

दंडेन घटः। दंडहेतू करुन् घटश्चात्का। इत्थं भूतलक्षणे। कोणी एकप्रकारा
 संपावला। यासलक्षणे वाच्य अस्तीति तीया होय। जटाभिः स्तापसः। जटा
 स्ताप्य तापसत्वविशिष्टः इत्यर्थः। संज्ञः। अन्यतरस्यां। कर्मणि। संपूर्वक
 जो जानाति धातु। याचे जे कर्म त्याहून तृतीया होय। पित्रापितरं वा संजानी
 ते जाणतो। कर्मणा। यं। अभिप्रैति। सः। संप्रदानं। दानाचे जे कर्म तेणे क
 रुन्। यापुरुषाते अभिप्रैति स्त-प्रनांत आणतो सः तो संप्रदान संस्कृ
 होय। चतुर्थी। संप्रदाने। संप्रदान जे ते अनुक्त अस्तीति चतुर्थी होय। वि
 प्रायगो ददाति। क्रियाजीतीने करुन् जो अभिप्रैति ज्या प्रतिजातो तो
 पुरुष सोपि तोही संप्रदान संस्कृ होय। पत्ये रोते। पतिवकारणे जासे।
 परिक्रमणे। संप्रदानं। अन्यतरस्यां। नियतकालं एतावत्कालं भूत्या

अनुक्तैश्च
येवदानीयेति
प्रः।

मचूरी स्वीकरणं भूतीनेकस्तुजोस्वीकारत्यासपरिऋयणल. त्याचे ठाई जें साधक
 तमअसे जे कारक ते संप्रदान संशयिकल्पे करून होया शकते न रातायवा।
 परिकीतः ल. घेतला। तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या। मुक्त्यर्थे हरिं भजति। उपा
 तेन। सापितेच। उपाते करून सापित अस्ता चतुर्थी बोलावी। वातायक
 पिला विद्युत्। हितयोगेच। हितशब्दाचा योग अस्ता चतुर्थी होया। ब्राह्म
 णाय हिते। तुमर्थीत्वाच। भाववचनात्। भाववचनाश्वे यासूत्रे करून वि
 हितजो तदंताहून चतुर्थी होया। यागाय ल. यष्टं याति ल. जो तो। यष्टं या
 तीत्यर्थः। उपपेद विभक्तीपेक्षां कारक विभक्त्ये बळकट। नमस्करो
 तिदेवान्। नमः। स्वस्ति। स्वाहा। स्वधा। अलं। वषट्। योगात्। च। एभि
 र्योगे चतुर्थी स्यात्। इत्युक्त्या शब्दाशी योग अस्ता चतुर्थी होया। हरये नमः।

माम-को-

विभाग

प्रजाभ्यः स्वस्ति अग्रये स्वाहा पितृभ्यः स्वाधा अलमिति पर्याप्तग्रहणं अलं
 शब्दार्थबोधकजे पर्यायशब्दस्य श्रीयोगअस्ताचतुर्थी होय तेन देसेभ्यो ह
 रिरलं प्रभुः समर्थः शक्तः इत्यादि ध्रुवं अपाये अपादानं अपायो वि
 शेषः सुटणे अस्ताजे ध्रुवभूतस्य राहिले ते अपादाने होय अपादाने संशक्
 पंचमी अपादान अर्थवाच्य अस्ता पंचमी होय ग्रामादायाति धावतः
 अश्वात् पतति इत्यादि जनिकर्तुः प्रकृतिः जायमानस्य होणार जो त्या
 चा जो हेतु तो अपादान संशक् होय ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायंते ल्यबूली
 ये कर्मणि अधिकरणे चाल्यवाचालीप अस्ता कर्मवाचकजे पद अं
 णस्वी अधिकरणवाचकजे पद त्याह न पंचमी होय आसादात्तु अ
 टाळी प्रक्षते आसनात् प्रक्षते आसाद जो त्या प्रतिचटु नृ प्रक्षते

पाहतो। आसनाचे ठाई वसून प्रेक्षते पाहतो। विभाषा। गुणे। अस्त्रियां। गुण
 वाचक हे तु वाचक स्त्रिलिंगीने सेल असा जो राब्द लसेलुन पंचमी विकल्पे करू
 न होये। जाउया जो उयेन वा बद्धः। गुणे किं। धने न कुलें। अस्त्रियां किं। बुद्ध्या
 मुक्तः। विभाषा असा योग विभागास्तव अगुणे पि गुण वाचक न स्ता ही
 स्त्रियां नाम स्त्रिलिंग अस्ता ही पंचमी होय। धूमादग्निमान्। नोस्ति घटा
 अनुपलब्धेः। उपलब्धे नो ही। पृथक् विना नानाभिः। तृतीया अ
 न्यतरस्यां। यां राब्दारीं योग अस्ता तृतीया विकल्पे करून होय। पक्षे पं
 चमी द्वितीये च। पृथक् रामेण रामात् रामं वा। एवं विना नाना अन्यत
 रस्यां ग्रहणे समुच्चयार्थे। पंचमी द्वितीये अनुवर्तते। अपपरी। वर्ज
 ने। वर्जनस्पजो अर्थ त्याचे ठाई अपपरी ते कर्म प्रवच्यं यस्य संज्ञक होत। आ

मध्य-को.

कारक

३। मर्यादावचने। मर्यादा अणरवीवचनया अर्थी जो आउ. तो कर्म प्रवचनी
ये संज्ञक होया। एथे वचन ग्रहणास्तव अभिविधावपि प्र. अभिविध अर्थी
पंचमी। अपाहुपरिभिः। कर्म प्रवचनीय संज्ञक जे हे यो श्री योग अस्ता
पंचमी होया। संसारः जो तो हरेः अपः नाम अलिकडे। अत्र सूत्रे वर्जना
र्थी परिशब्द जाणावा। अपसाहचर्यास्तव। लक्षणा दो तु। हरिं परि।
आमुक्तेः संसारः। आत्मकला तू सकलं अभिव्याप्य ब्रह्म जें तें तिष्ठति
आहे। प्रतिः। प्रतिनिधि प्रतिदानयोः। प्रतिनिधि अणरवी प्रतिदान
या अर्थी जो प्रतितो कर्म प्रवचनीय संज्ञक होया। प्रतिनिधि प्रतिदाने।
च। यस्मात् अत्र अस्मिन् सूत्रे कर्म प्रवचनीय संज्ञक जे त्या श्री योग अ

स्तापंचमीहोय। प्रथमः कृष्णार् प्रतिनिधि। तिलेभ्यः घेउनुमाषान्त्संते प्रति
 पषतिदेतो अन्यो आरात्। इतरा ऋते। दिक् शब्दात्। अंचेतरपदात्। आचू।
 आहि। पुक्ते। एते योगे शांती योग अस्तापंचमीहोय। अत्र अन्यशब्देकरुने
 अन्यार्थकशब्दात्। योग अस्ताहि पंचमी। इतर गेहणं प्रपंचार्थे। अन्यो मि
 न् इतरो वा कृष्णार्। आरादूनात्। ऋते कृष्णार्। पूर्वो ग्रामात्। दिशि दृष्टः
 शब्दो दिक् शब्दः तेन त्याकारणास्तव संप्रति संप्रति देशार्थवाचक कालवा
 चक यन्वा योग अस्तो हि पंचमी भवति। चेत्त्रात् पूर्वः फाल्गुनः। प्राक् प्र
 त्यग्वा ग्रामात्। आचू। दक्षिणा ग्रामात्। दक्षिणा ह अत्र प्रत्ययात्। आहि
 प्रत्ययात्। आहि। दक्षिणा हि ग्रामात्। दूरं तिकार्थेभ्यः। द्वितीया च। दूरार्थक
 अंतिकार्थक जेशब्दत्वाद् द्वितीया होय चकारास्तव पंचमी तृतीया होय॥

नध. को.

कारक

प्रातिपदिकार्थमात्रे अयं विधिः। गामस्य दूरं दूरात्। दूरेण वा। अंतिकं। अं
तिकात्। अंतिकेन वा। असत्त्वचनस्य याची अनुवृत्त्ये आह यास्तव इह न।
दूरः पृथः। यतश्चाध्वकालनिर्मितां तत्र पंचमी तद्युक्ता। अध्वनः प्रथमा
सप्तम्यो कालात् सप्तमी च वक्तव्या। ज्याहून अध्वाची कालाची उल्लेख आह तत्र
ज्याहून पंचमी होय। वनाशी जो तद्युक्त स. जो उला अध्वावाच कुरुव्ये
ज्याहून प्रथमा सप्तमी होय। कालवाच काहून सप्तमी बोलावी। वेनात्
ग्रामे योजनं योजनं वा। कार्तिक्याः आग्रहायणी मासे ॥ षष्ठी। शेषे। कार
क प्रातिपदिकार्थव्यतिरिक्त जो स्वस्वामिभावादि कुजे अर्थ तो शेषार्थ।
तत्र षष्ठी। राशः पुरुषः। कर्मादि कुजे अर्थ संस शेषे विवक्षा अस्ता ष
ष्ठी होय। सतां गतं। सर्षिषो जानीते। मातुः स्मरति। एधो दकस्यो पस्कु रते।
काष्ठ